>

Title: Discussion regarding reported incident of religious conversion in the state of Uttar Pradesh.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष जी, सबसे पहले हम आपको धन्यवाद देना चाहते हैं कि आपने इतने अहम मुद्दे पर इतनी सरलता से चर्चा करने की अनुमति प्रदान की है। इस विषय पर चर्चा करने की हमारी एक ही सोच है। हमारा मुद्दा यह नहीं है कि हम सरकार को कलंकित करें। हमारा मुद्दा यह नहीं है कि हम किसी को नीचा दिखाएं। यह एक ऐसा मुद्दा है जो भारत के 125 करोड़ लोगों के साथ जुड़ा हुआ है। हम भारत की प्रजातंत्र प्रणाली में अपना जीवनयापन कर रहे हैं। यह प्रजातंत्र विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। इस प्रजातंत्र के संविधान में मूल रूप से सिद्धांतिक मुद्दों पर लिखा गया है कि संविधान के आधार पर हर देशवासी को धर्म के मुद्दे पर आजादी दी जाती है, विचार के मुद्दे पर आजादी दी जाती है, देश की एकता और अखंडता बनाए रखने के मुद्दे पर आजादी दी जाती है। आज हमें केवल अपने क्षेत्र में उदाहरण नहीं देना होगा, बल्कि प्रजातंत्र के झंडे को ऊंचा रखने के लिए हमें विश्व में उदाहरण देना होगा कि धर्मनिरपेक्षता के आधार पर विश्व को अपना जीवनयापन किस तरह करना चाहिए।

अध्यक्ष जी, मेरी सोच में हमारा देश एक गुलदस्ता है। इस गुलदस्ते में एक तरह के फूल नहीं हैं, बल्कि इस गुलदस्ते में अनेक तरह के फूल हैं, जिनके आधार पर भारत की महक विश्व मे रहने वाले हर व्यक्ति तक पहुंचती है, यह विशेषता केवल मेरे देश में है और यह विशेषता किसी दूसरे देश में नहीं है। मुझे आज गर्व है कि मैं एक हिन्दू हूं, लेकिन मेरा धर्म मुझे संकीर्णता नहीं सिखाता, मेरा धर्म हमें एक संकीर्ण विचारधारा नहीं सिखाता, मेरा धर्म पूरे विश्व के लिए हमें और मुझे एक व्यापक दृष्टिकोण का परिचय देता है। मेरा धर्म कटुता नहीं सिखाता। मैं तो यह मानता हूं कि मेरा धर्म एक धर्म नहीं है। मैं तो यह मानता हूं कि मेरा धर्म अगर कुछ है तो मेरा धर्म एक दर्शनशास्त्र है, एक फिलॉसोफी है। हमारा एक नारा था, जिसे हम आज भी आध्यात्मिक चर्चा में बहुत तरीके से उपयोग करते हैं। पर, कहीं-कहीं मुझे इस बात का दुःख लगता है कि कहीं हम उस रास्ते से न भटक रहें हों। हम लोग अपनी चर्चा में कहते हैं - वसुधैव कुटुम्बकम। पूरा विश्व एक परिवार है, तो फिर हमारी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।...(व्यवधान) सुनने का धैर्य रखिए।...(व्यवधान) आपको भी बोलने का मौका मिलेगा।...(व्यवधान)

उत्तेजित मत होइए।...(व्यवधान) वसुधैव कुटुम्बकम का पालन कीजिए।...(व्यवधान) अनेक विचारधाराओं को भी सम्मिलित कीजिए।...(व्यवधान) सुनने की क्षमता रखिए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, आज हमारे सामने एक बड़ी दुःखद घटना आयी है।...(व्यवधान) आगरा में दो सौ लोगों का, 57 परिवारों का धर्म परिवर्तन किया गया, फोर्सिब्ली धर्म परिवर्तन किया गया और उनको प्रलोभन दिया गया कि अगर आप धर्म परिवर्तन करेंगे तो आपको राशन कार्ड दिया जाएगा, आपको बीपीएल कार्ड दिया जाएगा।...(व्यवधान) क्या आज इस स्थिति में यह अच्छे दिन की सरकार आ चुकी है कि लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन दिया जाता है कि आप बीपीएल कार्ड और राशन कार्ड धारक बन जाओ और धर्म परिवर्तन करो।...(व्यवधान) यह ... * के द्वारा आयोजित किया गया है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : किसी भी संस्था का नाम रिकॉर्ड में नहीं जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ज्योतिरादित्य जी, किसी भी संस्था का नाम न लें। वह रिकॉर्ड में भी नहीं जाएगा। यह मैं आगे के लिए भी बता रही हूं।

â€¦(व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : अनेक संस्थाओं के लोग कहते हैं, समझदार को इशारा काफी है, कि यह लोगों की घर-वापसी है और इसमें किसी तरीके की क्षमाप्राप्ति की विचारधारा नहीं है। यह भी कहा जाता है कि यह याद रख लेना कि यह मात्र शुरूआत है। आगरा के बाद अलीगढ़ में, अनेक ज़गहों पर केवल एक धर्म नहीं, लेकिन हम लोग दूसरे धर्मों का भी परिवर्तन करेंगे, यह कहा जाता है।...(व्यवधान)... हर साल मैं दो हजार लोगों का धर्म परिवर्तन करती है। यह सारा परिवर्तन और सोच, विचारधारा किसी-न-किसी धर्म की आस्था के साथ जुड़ा है। क्रिसमस आ रहा है तो इस विषय पर आज चर्चा करें।

अध्यक्ष महोदया, इसमें *... रिकॉर्ड में है।...(व्यवधान) यह मैं कहूंगा, मैं बिल्कुल कहूंगा कि वे कहते हैं केन्द्र सरकार हमारे कंट्रोल में है और हम इसे करते जाएंगे।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, यह संविधान के विपरीत है। आपकी संस्था के *..... ने कहा है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : किसी भी संस्था का नाम, जो सदन में नहीं हैं, उनका नाम रिकॉर्ड में नहीं जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : वह कहते हैं कि हम लोगों ने पौने तीन लाख मुस्लिम और इसाई ब्रज रीजन में रि-कंवर्ट किया है और आगे भी मुस्लिम और ईसाइयों को हिन्दू धर्म में वापस लिया जाएगा।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, यह विषय संविधान के विपरीत है और जो असली मुद्दे हैं सरकार के सामने, चाहे वह काला धन का मुद्दा हो, चाहे वह पाकिस्तान और चीन की घुसपैठियों का विषय हो, चाहे वह रेल फेयर हाइक का विषय हो, इन सब मुद्दों से दूसरी तरफ ध्रुवीकरण की तरफ ले जाने की सोच, विचारधारा, मैं समझता हूँ कि इसी आशा और विश्वास के साथ यह पूरा एक प्रोग्राम इनका चल रहा है। एक नये ध्रुवीकरण का विस्तार किया जा रहा है, नहीं तो सरकार जवाब दे कि जो प्रिवेंशन ऑफ कम्युनल टार्गेटेड वायलेंस बिल है, उसके बारे में आज तक गृह मंत्रालय ने स्पष्टीकरण क्यों नहीं दिया?...(व्यवधान) आज संसद जवाब जानना चाहती है, देश की जनता जवाब चाहती है।

महोदया, यह संविधान बनाया गया है, ऑफ दी पीपल, बाई दी पीपल एंड फॉर दी पीपल। यह संविधान लोगों का है, यह लोगों के द्वारा बनाया गया है और लोगों के लिए बनाया गया है। संविधान की रक्षा करने की शपथ इस सरकार ने ली है, कायम रखने की जिम्मेदारी इस सरकार ने ली है।

15.11hrs (Hon. Deputy Speaker *in the Chair)*

जो आड़ में लिया जाता है कि यह केन्द्र का मुद्दा नहीं है, यह राज्य व्यापक मुद्दा है, जब ये घटनाएं अनेक राज्यों में हो रही हैं, 7 महीने से इस सरकार का एक एजेंडा ध्रुवीकरण का पूरे देश में चला है, देश के वातावरण को तो आप देखिए।

जहाँ एक तरफ हम लोग स्वामी विवेकानन्द जी के बारे में कहते हैं, बार-बार अनेक नेता स्वामी विवेकानन्द जी का नाम लेते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने क्या कहा था? स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि जरूर मेरा भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरेगा, लेकिन यह याद रखें कि यह भारत एक आर्थिक नक्षत्र के रूप में तभी उभरेगा, जब इस भारत की आध्यात्मिक शक्ति एक नक्षत्र की तरह उभरेगी। उस आध्यात्मिक शक्ति को बचाये रखना, उस आध्यात्मिक शक्ति को कायम रखना, यह आपका फर्ज है, हमारा

फर्ज है और इस देश के हर वासी का फर्ज है। ...(व्यवधान)

पिछले सात महीनों में 6 सौ दंगे उत्तर प्रदेश और हरियाणा में हुए। ...(व्यवधान) पिछले सत्र में, एक धर्म के व्यक्ति को, उनके धार्मिक समय में, रमजान के समय में, पकड़कर खाना खिलाया गया। यह शर्म की बात है। हमारे देश की गौरव सानिया मिर्जा जब एक राज्य की ब्रैंड एम्बेसडर बनने वाली थीं, तो एक दल के लोगों ने कहा कि वह पाकिस्तान की बेटी है। ...(व्यवधान) इससे बड़ी शर्म की बात क्या हो सकती है? ...(व्यवधान) एक जागरण त्रिलोकपुरी में आयोजित किया गया, जहां एक जगह एक समाज के लोग हैं, ताकि वहां दंगे हो पाएं। दिल्ली में कभी भी ताजिया के समय में असुरक्षा का वातावरण नहीं रहा। यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ है कि असुरक्षा का वातावरण, जब दिल्ली में ताजिया निकल रहा था, तब हो गया था। दिल्ली में चर्च जलाए गए।

उपाध्यक्ष जी, सरकार की एक मंत्री ने क्या वक्तव्य दिया, ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया, मैं नौजवान हूं, लेकिन उस शब्द का इस्तेमाल इस संसद में नहीं कर सकता हूं। एक तरफ रामजादों और दूसरी तरफ जिस शब्द का इस्तेमाल किया, मैं समझता हूं कि जितनी निन्दा हम उसकी करें, वह कम होगी। क्या एक समाज और दूसरे समाज, एक धर्म और दूसरे धर्म के बीच हम इस देश में कटुता पैदा करना चाहते हैं? क्या ये अच्छे दिन हैं? क्या इस तरीके से हम देश को बनाना चाहेंगे? यह देश तभी बन पाएगा, जब इस देश की आत्मा को हम सुरक्षित रखेंगे। इस देश का शरीर तंदुरूस्त होगा और अगर आत्मा सड़ गयी तो इस देश का उत्थान नहीं हो पाएगा।

इस सरकार की मंत्री ने कहा कि एक धर्म की किताब को राष्ट्र ग्रंथ बनाया जाना चाहिए। राष्ट्र ग्रंथ इस देश में एक ही है और वह हमारा संविधान है, जो धर्मनिरपेक्षता की बात करता है। कोई दूसरा राष्ट्र ग्रंथ नहीं हो सकता है। अध्ययन के क्षेत्र में तीसरी लैंगुएज को हटाकर संस्कृत को डाला जाता है, क्यों, क्योंकि ...* के आधार पर इस सरकार का शिक्षा क्षेत्र चल रहा है। पहली बार हमने देखा है कि सरकार के मंत्री....* के लिए जा रहे हैं। यह कभी नहीं देखा गया, किसी भी सरकार के समय में, जो आज देखा जा रहा है। ताजमहल की बात की जाती है और कहा जाता है कि यह प्राचीन तेजोमहालय मंदिर का हिस्सा था। इतिहास को बदल रहे हैं, संस्कृति को बदल रहे हैं, देश के अस्तित्व को बदल रहे हैं। इतिहास को बदल रहे हैं, वर्तमान को बदल रहे हैं, लेकिन भविष्य के बारे में कोई नहीं सोच रहा है।

उपाध्यक्ष जी, मैं इन घटनाओं की घोर निन्दा करता हूं। सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि अगर संविधान के विरुद्ध कोई भी घटना हो, संविधान को सुरक्षित रखना सरकार की जिम्मेदारी होती है। हमारा देश एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, एक डेमोक्रेटिक रिपब्लिक है, प्रजातंत्र राष्ट्र है। आप सरकार में रहे या न रहें, लेकिन इस देश की कल्पना रहेगी, इस देश की धर्मनिरपेक्ष सरकार की परिकल्पना रहेगी और वह हमारे जीन में है, उसमें कोई दो राय नहीं है। हम चाहते हैं कि इस विषय पर प्रधानमंत्री जी स्पष्टीकरण दें। प्रधानमंत्री जी को भी एक समय में आपके पार्टी के नेता ने ही कहा था कि राजधर्म निभाना चाहिए। सात महीने में इतने मौके निकले हैं, उसी राजधर्म को निभाने के लिए, देश के प्रधानमंत्री सभी लोगों के प्रधानमंत्री होते हैं, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन, ईसाई के प्रधानमंत्री होते हैं, देश के हर वासी के प्रधानमंत्री होते हैं। क्या उनका दायित्व नहीं है, एक वक्तव्य देने का, अमन-चैन का वातावरण तय करने का, देश की रक्षा करने का, उनकी जवादेही इस सदन में और इस देश के प्रति बनती है और उनकी तरफ से हम स्पष्टीकरण और जवाबदेही चाहते हैं। पूरा विश्व आज भारत को देख रहा है। हम विश्व में छाती तान कर बोलते हैं कि हमारा राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। हमारी आत्मा धर्मनिरपेक्षता की है। आज वह वास्तविकता खंडित की जा रही है तो उसे बचाए रखने की जिम्मेदारी इस सरकार की और प्रधानमंत्री जी की बनती है।

अंत में उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक ही चीज कहना चाहता हूं कि मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना, हिंदी हैं हम वतन हैं हिन्दुस्तान हमारा।

HON. DEPUTY SPEAKER: Hon. Members, I want to make some observation. The subject is a very serious one. It also arises due to the reported incident of religious conversion. So, the hon. Members are requested to remain within the subject under discussion. There must not be any ill-feelings on both sides. Whatever the hon. Members want to say, you can say within the limits, and I request you not to go beyond the limits. The whole country is watching what we are discussing now. So, this is my request.

I am making this observation and I am requesting all of you not to go beyond certain limits; whatever you want to say, you can say within the rules and regulations and not beyond.

Shri Sumedhanand Sarswati.

श्री सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर): उपाध्यक्ष महोदय, आज एक ऐसे विषय पर चर्चा करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं, मैं समझता हूं कि जिसकी आवश्यकता नहीं थी, परन्तु हमारे कुछ भाइयों ने एक सामान्य-सी घटना को उछाल कर ऐसा विषय बना दिया है, जिसको वे बहुत सेन्सिटिव मानते हैं। अभी हमारे भाई सिंधिया जी विचार रख रहे थे। मैं समझता हूं कि जिस विषय पर उनको कुछ कहना चाहिए, उस पर न उनका चिंतन था और न ही अध्ययन था। धर्म कभी परिवर्तित नहीं होता है। आप मनु को पढ़ेंगे तो मनु ने धर्म के 10 लक्षण बताए हैं।

धृति क्षमा दमोस्तेयम् शौचं इन्द्रियनिग्रह।

धीविद्या सत्यं अक्रोधः दशकम् धर्म लक्षणम् ।।

इन 10 चीजों को हिन्दू, मुसलमान, सिख, जैन, बौद्ध, विश्व का कोई भी व्यक्ति अपना सकता है।

वेद स्मृति सदाचार स्वस्यच प्रिय आत्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्म लक्षणम्।।

ये सब धर्म के लक्षण हैं। आप कह रहे थे कि हमारा देश ऐसा देश है जिसने हमेशा ही धर्म के प्रति आस्था रखी है, इसमें कोई दो राय नहीं है। हमारी संस्कृति हजार वर्ष, दो हजार वर्ष या पांच हजार वर्ष पुरानी संस्कृति नहीं है। यह सृष्टि जब से बनी है, तब से 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पुरानी हमारी संस्कृति है। वेदों, उपनिषदों, महाभारत और रामायण का इतिहास है, इस देश में जितने भी लोग आए उनको गले से लगाया। मैं इतिहास के उन पलों की ओर नहीं जाना चाहता था, लेकिन हमारे बंधु जो आक्षेप लगा रहे हैं। मैं थोडी चर्चा करना चाहूंगा कि किस संस्कृति ने धर्म परिवर्तन की परंपरा प्रारंभ की है। मैं ऐसी बात नहीं कहना चाहूंगा। मैं सबूत के साथ बात कहना चाहूंगा, आप मेरी बात कोट कर सकते हैं, सदन और सदन से बाहर इस विषय पर मुझसे चर्चा कर सकते हैं। आप औरंगजेब के इतिहास को उठाकर देखिए। गुरू गोबिंद सिंह जी को ले लीजिए। वीर वंदा वैरागी

के 11 हजार सैनिकों को, आज भी गुरुदासपुर का किला इस बात का गवाह है, एक-एक आदमी की गर्दन केवल इसलिए उतार दी गई कि वे इस्लाम को स्वीकार करें। सरहिन्द की वह दीवार आज पुकार-पुकार कर कह रही है। आप पंजाब में सरहिन्द की दीवार के पास खड़े होंगे, वह दीवार इस बात की साक्षी है कि दो बच्चों की गर्दन केवल इसलिए उतार दी गई...(व्यवधान) थोड़ा सा धैर्य से सुनिए।...(व्यवधान) अगर मैं इतिहास से एक लाइन भी इधर-उधर हट जाऊं तो माननीय उपाध्यक्ष जी से निवेदन करूंगा कि वे मुझे बैठने का आदेश दे दें।...(व्यवधान) मैं अपनी बात संक्षेप में कहना चाहूंगा।...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: When your own Member is speaking, please do not make comments. Let him say whatever he wants to say. I will manage the House. You are not in the Chair. Please cooperate.

...(*Interruptions*)

श्री सुमेधानन्द सरस्वती : गुरू गोबिंद सिंह जी के उन चार बच्चों का क्या दोष था जिनमें से दो धर्म हेतु बलिदान हो गये और दो को दीवार में चिनवा दिया गया। औरंगजेब के समय में...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

श्री भगवंत मान (संगरूर): यह इतिहास है, इसे भी बदल दीजिए।...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri Mann, if you go on speaking like this, I will take action against you. Please allow him to speak. He has a right to speak. You cannot go on interrupting him like this. Shrimati Ranjeet Ranjan, I may tell you also, please do not get up and speak like this. Let him speak. Otherwise, when you will be speaking they will create disturbance. I want to run the House peacefully because an important issue is being discussed. Please listen to the hon. Member. I would request you to cooperate. He is making certain points. Let him speak. If there is anything objectionable, I will expunge it. I have a right to go through the record. You cannot create problem here.

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (आनंदपुर साहिब) : उपाध्यक्ष महोदय,...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: You may speak when your turn comes.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER; Please take your seat. Let him speak.

...(*Interruptions*)

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : उपाध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूं कि ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY-SPEAKER: I would request you also, when you are speaking do not create any problem. We are discussing a very serious matter. I made this observation in the beginning itself. The whole country is watching you. We must not give any wrong message to the country. That is my only request to the hon. Members.

श्री सुमेधानन्द सरस्वती : मैं कोई भी ऐसी बात नहीं कहूंगा, मैं आपके सामने इतिहास की बात कर रहा था। मैं कह रहा था कि दो बच्चे धर्म के लिए शहीद हुए और दो दीवारों में चुन दिए गए।

मैक्समुलर और मैकाले दो व्यक्ति आए और उन्होंने शिक्षा के नाम पर यहां ईसाइयत का प्रचार प्रारंभ किया। मैं अपनी बात नहीं कह रहा हूं। मैं महात्मा गांधी जी को कोट करना चाहूंगा। गांधी जी कहते हैं -- 'आज भारत में और अन्य कहीं भी धर्मांतरण की शैली के साथ सामंजस्य बिठाना मेरे लिए असंभव है। यह ऐसी गलती हो गई जिससे संभवत: शान्ति और विश्व की प्रगति में बाधा आएगी। कोई ईसाई किसी हिन्दू को ईसाई मत में धर्मांतरित क्यों करना चाहता है। हिन्दू भला आदमी है या धर्मांतरण है तो वह इससे संतुष्ट क्यों नहीं हो पाता।' यह 30 जनवरी, 1937 को गांधी जी ने इसलिए लिखा कि सारे देश में लालच देकर हिन्दुओं को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया गया। पूरा पूर्वांचल आज भी इस बात का साक्षी है। राजस्थान के झालावाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर और पाकिस्तान का पूरा बार्डर सुनियोजित तरीके से कैम्प कर-करके, पैसे का लालच, दवाई का लालच आदि शिक्षा के नाम पर परिवर्तित किया जा रहा है।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा इस बात के लिए लड़ती रही। तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम में जो कुछ हुआ, इसी सदन के अंदर आडवाणी जी ने उस मुद्दे को उठाया था। उसमें एक बात आई थी कि धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए एक कानून आना चाहिए। लेकिन मेरे भाइयों ने इसका विरोध किया कि इस प्रकार का कोई कानून नहीं आना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है और धर्म परिवर्तित कर सकता है। उस समय यह प्रस्ताव आया था। भारतीय जनता पार्टी की सरकारों ने गुजरात फ्रीडम ऑफ रिलीजन, 2003, भाजपा की सरकार ने इसको पास किया, दि हिमाचल प्रदेश फ्रीडम ऑफ रिलीजन, 2006 भाजपा की सरकार ने पास किया, राजस्थान फ्रीडम रिलीजन बिल, 2006 भाजपा की सरकार ने पास किया, मध्य प्रदेश धर्म स्वतंत्रता अधिनियम, 1968 भाजपा की सरकार ने पास किया। भारतीय जनता पार्टी यह कभी नहीं चाहती है कि इस देश में धर्म परिवर्तित हो, हमारी पार्टी की नीति है कि देश का प्रत्येक नागरिक स्वतंत्र रूप से विचरण करे। स्वतंत्र रूप से प्रत्येक आदमी अपनी पूजा-पाठ पद्धति पालन करे। लेकिन मैं आपसे एक बात अवश्य कहना चाहूंगा कि वर्तमान में जो आरोप लगा रहे हैं, जिन लोगों ने इस परंपरा को प्रारंभ किया, पहले वे अपने कामों को रोकें। जहां उनकी सरकार है वह इस प्रकार की प्रवृत्ति पर रोक लगाएं, जिससे इस देश में इस प्रकार की परिस्थितियां पैदा न हों।

आज सदन के अंदर जो चर्चा प्रारंभ की गई है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, इसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है। हमारी सरकार कभी भी इस प्रकार का वातावरण पैदा नहीं होने देगी, लेकिन मैं पुनः कहना चाहूंगा कि यदि देश में कहीं भी इस प्रकार का वातावरण पैदा किया जाएगा, लालच देकर, लोभ देकर, देश में धर्म परिवर्तन कराया जाएगा, अगर आप विभिन्न प्रांतों की जनसंख्या के आंकड़े उठाकर देखेंगे, तो आपको पता चलेगा, क्योंकि समय का अभाव है, इसलिए पूरी बात आपके सामने नहीं रखूंगा। जिस प्रकार से इस देश में जनसंख्या के हिसाब से परिवर्तन किया गया ईसाईयत में कन्वर्ट किया गया है। आज भी जेहाद के नाम पर और भी बहुत सारी बातों के नाम पर गरीब हिन्दुओं का धर्म परिवर्तित कराया जा रहा है। यह देश के साथ एक षडयंत्र है। भारतीय जनता पार्टी के जितने भी अनुषंगी अंग हैं, उसका कोई भी सहयोगी इस प्रकार की हरकत नहीं करता है, न इस प्रकार का कोई काम करते हैं। मैं तो भुक्तभोगी हूं, इस काम के लिए इस देश में स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेख राम और राजपाल को बलिदान देना पड़ा।

मैं विचार की दृष्टि से आर्य समाज से संबंध रखने वाला व्यक्ति हूं, जो हमेशा इस बात विरोध करता रहा है। हमारी वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म, हिन्दू धर्म हमेशा उदारता का द्योतक रहा है। यहां केवल यही संस्कृति है जिसमें सर्वेभवन्त् सुखिना की बात कही गई है। शायद ही किसी संस्कृति में इस प्रकार की बात कही गई होगी। इस प्रकार की चर्चा

ज्योदिरादित्य सिधियां जी कर रहे थे इसमें किसी प्रकार का कोई सार दिखाई नहीं दिया, यह निरर्थक चर्चा है, इस चर्चा को कंडेम किया जाए, मेरा यही निवेदन है।

SHRI P. KUMAR (TIRUCHIRAPPALLI): Hon. Deputy Speaker, Sir, I thank you for this opportunity to speak on this sensitive issue. It calls for communal harmony which is the only solution.

On behalf of AIADMK Party, I would like to make it clear that we are for taking all the communities together. We believe in equal respect for all religions. Our Party leader Makkalin Mudhalvar Puratchi Thalaivi Amma has taken several measures to protect and promote religious fervour, combined with social and communal harmony. Let me take this opportunity to bring to the notice of this august House various measures that are being taken up by our hon. Puratchi Thalaivi Amma.

No religion in Tamil Nadu fails to get the patronage of the State Government as we respect all the religious faith. Our Government helps all the people belonging to all the religions. Thus our State Government takes all possible measures to maintain communal harmony.

As we strongly believe that religion is an individual choice with constitutional protection, we take care to avoid social tensions arising out of clash of interests. Hon. Deputy-Speaker, Sir, our Party leader Puratchi Thalaivi Amma believes that worship places must bring together all the people, especially the needy. That is why '*Annadanam*' programme in all major temples is being carried out at the instance of our leader Puratchi Thalaivi Amma.

All the religious pilgrims are encouraged as part of promoting social harmony. Manas Sarovar and Kedarnath pilgrims get financial assistance from our State Government. On similar lines, Muslims are getting Haj Pilgrim subsidy and Christians get Holy land pilgrimage subsidy.

As we do not believe in discriminating on the basis of religion, we are insisting on reservation to be extended to Dalit Christians.

Our Party strongly believes in unity in diversity and we have made sure that Tamil Nadu is free from communal clashes. With these words, I conclude my submission.

Thank you.

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Hon. Deputy-Speaker, Sir, I rise to speak on the discussion under Rule 193 initiated by Shri Jyotiraditya Scindia. I thank him for bringing this matter to the attention of the House. As has been mentioned earlier, this is a sensitive issue and we should not do or say anything which will raise the communal temperature of the House or the country. We should discuss the whole matter about what happened in Agra dispassionately and calmly.

What happened in Agra? In Agra in slum cluster called Madhunagar, 200 Muslims were converted to Hinduism in a religious function called *Ghar Wapsi,* getting back to home. They were promised ration card and houses. One person, named, *â€¦** a Muslim from that area said that 40 people in saffron came and stood on their head. This was carried out by *Dharmajagran Sammanyay Vibhag,* an off-shoot of RSS and Bajrang Dal....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Name of an individual cannot form part of the record.

PROF. SAUGATA ROY: I appreciate Swami Sumedhanand ji. He represents the Arya Samaj. Arya Samaj is one Hindu organisation which has done excellent work in spreading education. The DAV schools are there all over Northern India. I support the statement of Sumedhanand ji when he said that the BJP is against conversion. In that case, if he has said that BJP is against conversion, I would like the House to unanimously adopt a resolution saying that conversion is not the philosophy of this country and the whole House stands against religious conversion. I will support Swami Sumedhanand ji if he says that.

Sir, as a citizen of this country, as peoples' representative, I feel somewhat worried about the turn of events in the country. It is known historically that when capitalists failed to give economic relief, they went for religious or racial issues. The best example of this is Adolf Hitler, who on the basis of Aryanism created Fascism which is a mixture of reactionary philosophy and capitalism. That is the danger in the country. When economic relief will not available, then religious divisive issues will be raised. This is something which I am worried about.

Just today, one respected Member of this House, Dr. Swami Sakshiji Maharaj, said in a speech in Maharashtra that both Mahatma Gandhi and Nathuram Godse were patriots. Is this what the BJP accepts?...(*Interruptions*) It has come in all the news channels and you can see it. I thought that BJP is for Ram and now, it seems that BJP is for Nathuram. I do not appreciate that.

I am astounded by a statement of a senior Minister. I do not know what the provocation was. She suddenly said that Gita should be the national book or the national scripture. ...(*Interruptions*) I have read Gita. I have memorized it. What does it say? It says that to punish bad people.

परित्राणाय साधूनां

विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय

संभावमि युगे युगे।।

It is a matter of belief. Now, I cannot ask my Muslim friends ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Prof. Saugata Roy, please address the Chair.

PROF. SAUGATA ROY : Sir, I am a follower of it and I believe that the soul may be eternal. "न हनन्ते हन्माने शरीरे" Even if you kill the body, the soul will not be killed but my soul does not teach me that I have to force Gita on somebody whose religious book, maybe Quran, Granth Sahib, Tripitak or the Bible. Why should I impose that on anybody?

The whole idea is like this. This is called majoritarianism. जो संख्या गुरु है, उसे दूसरे पर मत लादो। हम इसके खिलाफ हैं।

Sir, I come from Bengal. We had the great sage, Ramakrishna Paramhansa. He said: "*Jato Mat Tato Path*" It means that there are as many ways as there are opinions. His great disciple, Swami Vivekananda went to America. He said that he was a Hindu Sanyasi and that he had come to talk about the teachings of his Guru, Ramakrishna Paramhans. But he never said that Christians get converted into Hinduism. He said that it is a question of people's belief. I think that Vedanta is a great philosophy as a Hindu Sanyasi.

Now, what is happening in this country? In Delhi, a church was vandalized. Two churches were vandalized and destroyed. What is happening? In a place called Trilokpuri, just before the Delhi elections, communal riots take place. Shri Jyotiraditya Scindia has mentioned that several hundreds, small and big, of communal riots have taken place. We all know about Muzaffarnagar riots and how they polarized the society in UP. It gave political benefit to a certain political party but do you want these things to happen?

Please believe that we are all citizens of this country. You wanted power and you have got power. Now it is your responsibility to see that everybody in the country can live peacefully according to the Constitution.

I salute the Founding Fathers of the Constitution. We happen to be victims of partition. Jinnah created Pakistan on the basis of two-nation theory. In spite of that the great founding fathers of our nation, Gandhi ji, Nehru ji, Azad ji, Ambedkar ji, and Dr. Rajendra Prasad created a secular Constitution. What did they say? They said: "We the people of India constitute India into sovereign socialist secular democratic Republic." ...(*Interruptions*) Shri Surinder Singh Ahluwalia, I know as much about the Constitutional history as you do, may be more. Please sit down. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Prof. Saugata Roy, you address the Chair.

...(*Interruptions*)

PROF. SAUGATA ROY : At this age and stage of my life, if I have to learn constitutional history from a great scholar like Shri Surinder Singh Ahluwalia that would be a day of shame of my life. ...(*Interruptions*) I can say this honestly.

SHRI S.S. AHLUWALIA (DARJEELING): I am on a point of order. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: What is your point of order? Please quote the rule and tell what is your point of order.

...(*Interruptions*)

SHRI S.S. AHLUWALIA : It is under article 118 of the Indian Constitution. I am talking about Indian Constitution. ...(*Interruptions*) In the Constitution which was adopted on 26th November, 1949 in the Central Hall, there was no mention about 'secularism'. It was added only in 1976. I can prove that. If you are correct, then show me that. ...(*Interruptions*)

PROF. SAUGATA ROY : Shri Ahluwalia, you are a great scholar. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ahluwalia, please take your seat now.

...(*Interruptions*)

PROF. SAUGATA ROY : In Bengali as well as in Sanskrit, there is a saying "*alpa vidya bhayankari*. It means, if you know only a little it is very dangerous. This is what is happening. I am not going into that. ...(*Interruptions*)

The problem today is that, as Shri Jyotiraditya Scindia has mentioned, in the educational field, the Vice-Chancellors are being appointed on political and communal basis. The Vice-Chancellor of the Benaras Hindu University founded by Pandit Madan Mohan Malviya, says that he is proud to be a BJP man. Is this how we want our Vice-Chancellors to be? The President of the ICHR, Indian Council for Historical Research, has no other subject except to find out the exact date of Ramayana and Mahabharata. Now, there is a difference between mythology, epics and actual solid history. Maybe he is not aware of that.

I had mentioned in this House earlier that the HRD Minister spends time with *â€¦ **, the ideologue of Hindu communalist organization, and supporter of astrology. What will happen to the scientific temper that Nehru ji had advocated? That is why I am worried and I will again, through you, appeal to the Members of the ruling party to give up this divisive attitude. Finally, I will finish in one minute flat. They need not revert to divisive politics for political gains. They have all the power in the world. Let them change the country. चेंज अगर लाना है तो लाया जाए, लेकिन लोगों में विभाजन पैदा मत करिए। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई-भाई। I end by quoting Poet Rabindranath Tagore. He said:

"*Eso He Arya*
Eso Anarya
Hindu, Musalman
Eso Eso Aj
Tumi Ingraj
Eso Eso Christian
Eso Brahman
Suchi Kori Mon
Dharo Hath Sabakor
Eso He Patit
Hao Apanit
Sub Apaman Bharâ€¦. "

Let this great country, with a 5000-year old tradition, not be divided asunder on the basis of religion, caste or community. Let us together march towards the future in a united way as was envisaged in the Constitution.

Lastly, I would say that there may be some bad elements which are close to them. ...(*Interruptions*) I remember what some of these people said after the demolition of the *Babri Masjid*....(*Interruptions*)

HON.. DEPUTY-SPEAKER: You are unnecessarily provoking them.

PROF. SAUGATA ROY : I will finish it now....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record. Shri Mahtab to speak now.

*(Interruptions) â€¦**

HON. DEPUTY-SPEAKER: That is where you are going beyond. Nothing will go on record. Only Shri Mahtab's speech will go on record. Shri Roy, I told you nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Mr. Deputy-Speaker, Sir, at the very outset, I would like to say that a very renowned English Novelist while writing one of the famous novels in English literature, said relating to a situation which had arisen during the French Revolution. He said: "It was the best of times, it was the worst of times." In the Tale of Two Cities, the first line connotes "It was the best of times, it was the worst of times." I would say that today is one of the worst of times that we are witnessing in this House. Yet, I would say that best things should come out from us.

What is Hinduism? Who is a Hindu? As far as I understand with my limited knowledge, a Hindu may be a worshipper of an idol; a Hindu may deride an idol; a Hindu may be going to the temple everyday. A Hindu may not be going to the temple at all. A Hindu may be going to the temple on certain days. A Hindu may be worshipping. A Hindu may not be worshipping. A Hindu may be a believer; a Hindu may not be a believer. Yet the whole community is known as Hindu. Everything is known as Hindu. But things are changing as it has changed and as it has evolved in these thousand years.

Sir, it is mentioned in our scripture, in our holy book" "सत्यम् एकः विप्रः बहुधा वदन्ति। Truth is one and intelligent people express themselves in different ways. It is not confined to Hindu religion alone. It is so encompassing the whole human kind.

There are many religions in this world. There are many religions which evolved from this part of the world which also express themselves in different parts of the world. When China was bereft of any religion, it was craving for something through which they can hold upon the society, to rely upon. That time, Buddhism showed them the way; shown them the path. So also is the case regarding large parts of South East Asia. I was told by one of my history professors, what is Christianity? It is but a distant drum beat of a rebel child of Hinduism. I may believe in that usage; I may not believe in that usage. But people have started interpreting the religious belief in such a way that suits their own conduct, that suits their own belief.

I would start by saying here, it was in late 1950s, perhaps in 1958 or 1959, maybe after 1959, a Bill was moved in Odisha Assembly to restrict conversion. A large number of conversions were taking place, specially in the tribal areas of Odisha. It was a concern not only in Odisha but also in the undivided Madhya Pradesh, undivided Bihar, parts of Bengal and large parts of North-East. But the attempt was first made in 1959, a Bill was moved. That was all part of history. The Bill was passed by the Assembly but before it could get the assent from Rashtrapatiji, the House fell.

Subsequently, when another Government came, after 1967, it was Swatantra Party and Jana Congress Government, a coalition Government, which had ousted the then Congress Government, and had come to power. The first Bill, as far as I remember, was relating to stop religious conversion. That was passed by the House. But a Christian body went against that Act to the Odisha High Court and the Odisha High Court quashed that Act. Subsequently it was in the 1970s when the Congress Government was in power in Odisha, the Government moved the Supreme Court. I am mentioning all this so that we can understand, cutting across party lines, how the anti-conversation idea has moved in this country.

During that period also, a Bill was also moved in Madhya Pradesh Assembly, and both these Bills went to the Supreme Court. And very peculiarly, I would say, if I may use that word, the Supreme Court held up the Bill that was passed by Odisha Assembly, and quashed the Bill that was passed in Madhya Pradesh Assembly. What did that Bill say? That Bill mentioned article 25 of the Constitution. Article 25 says, right to freedom

of religion. While explaining it, free of conscience and free profession, practice and propagation of religion. In sub-section 1, subject to public order - I would come to this aspect again and again - morality and health and to the other provisions of this part, all persons are equally entitled to freedom of conscience, and the right freely to profess, practice and propagate religion. This explains everything, everything in the sense that I am free to practisce, to profess, and also to propagate.

What did the Supreme Court say? Yes, one is free; my freedom is limited till it touches your nose. I am free to wield my hand, but it should not hit the other person who is before me. My freedom is restricted to that point; if I hit him, I break the law. But when I profess, when I propagate, when I practice, if somebody else is hit, if somebody else is offended, if somebody else feels bad about it, then, public order is disturbed. That is `public order'? Who is in charge of `public order'? It is the State machinery, the State Government.

The Constitution provides that it is the State Governments who have to maintain public order. And morality? Who is to maintain morality? It is the society which has to maintain morality. It is the society which is supposed to maintain the health of the society. In that connection, when the Government of Odisha passed that enactment in 1976, that Act went up to the Supreme Court, the Supreme Court upheld it and mentioned specifically that right to propagate can also be done, but it should be bereft of coercion or inducement.

We all know – and Swamiji also mentioned – what happened during the Middle Ages in this country. We are not in the Middle Ages; we are in the 21st Century and our forefathers have left behind a great legacy for us. What Swami Vivekanand said, what Mahatma Gandhi said and what Dayanand Saraswati had done during his lifetime, are not there something which we can learn and practise? There are many Godly and saintly persons even today in the society who propagate brotherhood and friendship among the people.

There was a time when the then Prime Minister of Britain said: 'These people are asking for Independence. The moment we come out from India, they will fight amongst themselves, India would wither away and it would be destroyed to dust.' But our forefathers have created a valuable document for us, the Constitution of India and it is the abiding light which will guide us from darkness.

Sir, the issue which we are discussing today, I think the Government of Uttar Pradesh is the right organisation or authority to determine whether public order has been destroyed or has not been maintained, whether inducement has been done, whether coercion has been made etc. Of course, this House has the right to discuss all matters that are of greater importance for this country. It is not only confined to our country. The whole world also, who have interest in India, will be looking at it. In that respect, I would only say that proselytization has taken place. Here, I remember a person who had moved from Mirzapur in Uttar Pradesh, went to Manoharpur in Keonjar District of Odisha – I am not mentioning his name – had created an incident there in which two children and one Australian were burnt alive. The person was not from Odisha, he was from Mirzapur in Uttar Pradesh. There were other incidents also that had occurred. There was a time in Odisha, I would say, when foreigners and those who wanted to preach a specific religion were not allowed to enter certain districts of Odisha, particularly the southern districts of Odisha. Now that provision is not there, that has been withdrawn. At that time, when a discussion was taking place in our Assembly – I can mention this out of my memory – unanimously an opinion was created that if we are against proselytization, against conversion and if somebody does not want this to happen especially in the tribal dominated areas where education was very less, where health service was very poor, where economic activities were not carried out during that time, why not other organisations of Hindu community go into those areas and do the work?

16.00 hrs

At that time, Vanvasi Kalyan Samiti was created. A large number of people went into the tribal belt of Odisha and they have done work. I am also aware as to how Ramakrishna Mission went into Arunachal Pradesh. Today, when someone goes to Arunachal Pradesh, the effect is, when you do *namaskar* or *pranam*, they will say: "Jai Hind". This is the result; this is the nationalism that Ramakrishna Ashram has instilled in Arunachal Pradesh. But that has not happened in other parts of North East. The Indianisation of our culture, of our philosophy has to be done. It should not be only done by the Government or the party that is in power in the Centre. It has to be done by all the political parties which want to serve this country.

But when conversion is taking place, I remember, some 10 or 15 years ago, a similar discussion was taking place in this House and one hon. Member posed a question, a very silly question but a very pertinent question: How many conversions have taken place in minority dominated areas from this religion to that religion and how many conversions have taken place in Christian dominated countries or Muslim dominated countries other than Pakistan? This is a question which every Indian should ponder and also think ourselves. Why is it that only Indians have to bear the brunt? Propagation is something which everyone is entitled to. One is entitled to propagate one's religion but one is not entitled to induce a person.

I would conclude by saying, Odisha Act, even today, gives sole responsibility to the district magistrate to maintain public order. Every individual, every citizen is free in this country to propagate his own religion. If I want to convert myself to some other religion, I can do so. No law can restrict it. The Freedom of Religion Act provides that freedom to me. But if I am going to do that, it should not create any nuisance in my society....(*Interruptions*) But, with that, I have to seek permission from the district magistrate that on such and such date and at such and such place, I am going to convert myself. If there are a large number of people, I have to seek permission. If I am an individual, I have also to seek permission; and a hearing takes place. I do not know what is happening in other States but here is a provision to maintain tranquility in society, to maintain public order in society. The district authorities have to find out whether he has been induced, whether he is being coerced. It cuts across each religion. So, that is to be maintained. Therefore I would request in this House, taking advantage of participating in this debate or discussion, why not every State Government adopts that Act of Odisha. It will restrict a large number of ill-will and ill feeling that is prevailing in this country and, at the same time, it will also pinpoint that the State administration, to a great extent, maintain public order.

Thank you, Sir.

SHRI S.S. AHLUWALIA : Hon. Deputy Speaker, Sir, on an issued raised, I need your ruling.

HON. DEPUTY SPEAKER: What is the issue?

SHRI S.S. AHLUWALIA : You know, Sir, while discussing, we cannot give wrong information about the Constitution, at least. The Constitution says: 'Sovereign, democratic, republic.' In 1976, through 42nd Amendment, 'sovereign, socialist, secular, democratic, republic' was added.

My submission is that the previous Member Shri Saugata Roy said that 'secular' word was given to the Constitution by Rajendra Prasad, Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru and Babasaheb Amebedkar. But that information is incorrect. Children are sitting in the gallery. ...(*Interruptions*) Parliament should not give wrong information to the people of this country. I need your ruling on this and correct the record. I have already given a copy of the Constitution of 1949 and the latest Constitution copy. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: This is the information that you have given. We have taken this information.

Now, Shri Arvind Sawant.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : महोदय, आज इस सदन में बहुत गम्भीर विषय चर्चा के लिए आया है।

HON. DEPUTY SPEAKER: Please be very brief because we have to complete this discussion before 5 o'clock. I request all the members to be very brief.

श्री अरविंद सावंत : महोदय, यह कैसे होगा, इतने गम्भीर विषय पर दो मिनट में बात कैसे करें? इस गम्भीर विषय पर सदन को दो बार एडजर्न करना पड़ा। मुझे समझ में नहीं आता कि इस देश का जो बँटवारा हुआ, इस देश की जो निर्मिती हुई, उसका बेस क्या है? अगर उसमें जाएँ तो पता चलेगा कि देश का बँटवारा हुआ, पाकिस्तान की निर्मिती हुई तो वह कौन से प्रिन्सिपल पर हुई, कौन से तत्व पर हुई? अगर उस तत्व को आज हम ध्यान में रखते, तो मुझे नहीं लगता कि आज उठकर कोई इस तरह से बात करता। बुरा इस बात का लगता है कि जब शाहबानो केस हुआ, तो इससे पहली वाली सरकार ने अमेंडमेंट कर दी, उस महिला को न्याय नहीं दिया, यही लोग हैं, जिन्होंने शाहबानो को न्याय नहीं दिया। ये आज उठकर कह रहे हैं कि हम फोर्सिबली कन्वर्शन कर रहे हैं। अरे भाई, कौन कर रहा है? मेरे पास स्टेटमेंट है, आपने समय कम दिया है, इसलिए मैं बताता हूँ। मुझे गर्व है कि मेरी पार्टी, हमारे हिन्दू हृदय सम्राट शिव सेना प्रमुख बाला साहेब ठाकरे जी का नाम लेकर हिन्दुत्व की बात करती है, मजहब की बात नहीं करती है। हम धर्म की बात जब करते हैं तो उन्होंने कहा कि हिन्दुत्व क्या है, हिन्दुत्व एक ऐसा धागा है, इस देश की जो रचना हुई, वह भाषावार प्रान्त रचना के ऊपर हुई। हर प्रान्त की अपनी-अपनी भाषा है। हम तमिलनाडु के हैं तो तमिल में बात करते हैं, हम आंध्र प्रदेश के हैं तेलगू में बात करते हैं, हम महाराष्ट्र के हैं तो मराठी में बात करते हैं, हम गुजरात के हैं तो गुजराती की बात करते हैं, लेकिन हम देश की बात कब करेंगे? उन्होंने कहा कि हिन्दुत्व का धागा पकड़ लो और ये सभी जो प्रान्त हैं, उन्हें एक-एक फूल की तरह उसमें गूंथ लो, तो आपको पता चलेगा कि हिन्दुत्व क्या होता है? उस हिन्दुत्व को लेकर हम खड़े रहे, देश की एकता को लेकर खड़े रहे। आज इस तरह से इतने बुजुर्ग लोग ऐसे विषय को लेकर सदन में आते हैं। जब हमारे ट्राइबल्स, हमारे आदिवासियों को क्रिश्चियन बनाया जा रहा था, तो उस समय ये चुप क्यों बैठे थे? जब हमारी महिलाओं को मुसलमान बनाया जाता है, तो उस वक्त ये चुप क्यों रहते हैं? मेरे पास तो केरल के मुख्यमंत्री जी की स्टेटमेंट है, मैं आपके लिए उनकी स्टेटमेंट पढ़ता हूँ।...(व्यवधान) एक मिनट, मैं नाम लेकर पढ़ दूँगा, उसमें कौन सी बड़ी बात है, as to what the Kerala Chief Minister said. He said that over 2,500 women were converted to Islam in Kerala since 2006. In June 25th Kerala Chief Minister *â€¦** informed the State Legislature that 2,667 young women were converted to Islam in the State since 2006. क्या वह प्यार से किया या जबरदस्ती से किया? हमारी राष्ट्रीय तीरंदाज तारा सहदेव है, इस लड़की को रकीबुल हसन नाम के मुस्लिम लड़के ने फँसाकर शादी कर ली और उसका इस्लाम में धर्मान्तरण किया गया। ये सारी बातें अखबारों में छपीं, कोर्ट तक पहुँची। केरल उच्च न्यायालय ने 6 नवंबर, 2009 को शहान शाह+1 vs केरल राज्य सरकार में एक निर्णय दिया जिसमें उन्होंने कहा कि "केरल के राज्य में लव जिहाद के नाम पर तीन से चार हजार लड़कियों से शादी मुसलमानों ने कर ली है।" ...(व्यवधान) मुझे इस बात का दुख है कि इस सदन में इतने बुजुर्ग लोग हैं....(व्यवधान) मैं तो कोर्ट की बात कर रहा हूँ, मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूँ। ...(व्यवधान) Your Chief Minister has made a statement. ...(*Interruptions*) I have an authentic proof for whatever I am saying. ...(*Interruptions*) You can answer me. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please take your seats.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: You can reply to him when your turn comes. Now, you please take your seat.

...(*Interruptions*)

श्री अरविंद सावंत : उपाध्यक्ष महोदय, हमारे महाराष्ट्र के नासिक जिले में तड़वन तहसील में एक अबोडे नाम का गाँव है। उस गाँव में एक स्कूल चलता था। उस स्कूल में जो स्कूल के प्रिंसिपल थे, वे ट्राइबल थे, उन्होंने धर्मांतरण किया, क्रिश्चियन धर्म लिया। अब उस स्कूल में उन्होंने लड़कियों पर ऐसी पाबंदी लगाई कि तिलक लगाकर नहीं आएँगी। She was not allowed to come to the school with the bangles. अगर वे पहनकर आईं तो उनको कहा जाता था कि उनको स्कूल से हटा दिया जाएगा। यह क्या था, क्या यह जुल्म नहीं था, फोर्सिबल कन्वर्शन नहीं था? यहाँ माननीय सदस्य डॉ. गावीत बैठे हैं। उनसे पूछिये कि नन्दुरबार जिले में क्या हो रहा है? पूरी तहसील में क्रिश्चियन लोग आकर वहाँ गरीबों को एक्सप्लाइट करते हैं। उनको खाना खिलाते हैं, उनको पैसा देते हैं। कहते हैं कि देखो, तुम्हारी सरकार कुछ नहीं करती, तुम्हारे बाकी लोग कुछ नहीं करते, आओ, हम तुम्हारी मदद कर रहे हैं। अब उनको पैसे दिये जाते हैं। पैसे देकर, लालच देकर लुभाया जाता है और कुछ दिन के बाद कहा जाता है कि कौन देगा आपको, हम ही तो दे रहे हैं, अब बनो क्रिश्चियन। सारे लोगों को क्रिश्चियन किया जा रहा है। तब ये लोग कहाँ गए थे? जो लोग आज आवाज़ उठा रहे हैं, जब हमारे हिन्दुओं को क्रिश्चियन किया जाता है, हमारी आदिवासी महिलाओं पर अत्याचार किया जाता है, हिन्दू लड़कियों को भगाकर ले जाकर मुसलमान धर्म अपनाने के लिए कहा जाता है, तब आप चुप क्यों बैठते हैं? तब आपने कभी सवाल नहीं उठाया। क्यों चुप बैठते हैं? मैं इसकी निन्दा करता हूँ।

महोदय, हमारे मज़हब ने हमें कभी नहीं सिखाया कि...(व्यवधान) हाँ, हम हिन्दुत्व की बात करेंगे। ...(व्यवधान) मैं बोलता हूँ आपको, मेरे साथ चलना आप अभी। हमारे मज़हब ने हमें नहीं सिखाया कि किसी दूसरे मज़हब से घृणा करे, किसी दूसरे मज़हब की निन्दा करे। हम निन्दा नहीं करना चाहते।

सभापति महोदय, हमारे बालासाहब ठाकरे जी थे। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please wind up now.

...(*Interruptions*)

श्री अरविंद सावंत : सभापति महोदय, मैं एक मिनट में खत्म कर रहा हूँ। यह बहुत महत्वपूर्ण है। जब बालासाहब ठाकरे बीमार हुए, तो उनकी सेवा डॉ. जलील परकार कर रहे थे, जो मुसलमान थे। हम हिन्दुत्व की बात करते हैं लेकिन जलील परकार मुसलमान है, लेकिन ऐसा कहकर उनकी सेवा हमने खंडित नहीं की। उसको विश्वास दिलाया। एक दिन कोई मित्र उनके घर में बैठा था और वह अस्वस्थ हुआ। उनसे पूछा कि क्या हुआ, क्या बात है? तो उसने कहा कि साहब, नमाज़ का समय हुआ है। यह उनके घर में मातोश्री की बात है। साहब ने नौकर को बुलाया और कहा कि इनको नमाज़ पढ़ना है, जाओ नमाज़ पढ़ लो। यह हमारा हिन्दुत्व है, यह हमारा बड़ा दिल है। हम इस तरह से बर्ताव नहीं करते।

इसलिए मैं कड़ी निन्दा करता हूँ कि जो लोग यह प्रस्ताव लाए हैं और मुसलमानों के वोटों के लिए, उनको लुभाने के लिए आप जो हिन्दुत्व की आलोचना कर रहे हैं, उसकी मैं कड़ी निन्दा करता हूँ।

HON. DEPUTY SPEAKER: Now, Shri Mulayam Singh Yadav. Please be brief.

श्री मुलायम सिंह यादव (आज़मगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ा सवाल यह है कि आज यह बहस करने की जरूरत क्यों हुई है। आजादी की लड़ाई में गांधी जी ने कहा था कि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर आजादी के बाद कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।...(व्यवधान) अमीरी-गरीबी के नाम पर भी कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा। मैं कहना चाहता हूं कि आखिर इसके लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं, इस बारे में तो कोई बोल ही नहीं रहा है। जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर बंटवारे कौन कर रहा है और इसके लिए कौन जिम्मेदार है, यह बोलने की कोई हिम्मत नहीं कर रहा है। मैं आपके सामने बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं क्योंकि मैं स्वयं इसका भुक्तभोगी हूं। मैं हाई स्कूल में पढ़ता था। अनुसूचित जाति का हमारा एक सहपाठी था। उसके घर पर मैंने खाना खा लिया। इसके लिए मुझे समाज से बहिष्कृत कर दिया गया । मैं सदन में अकेला सदस्य हूं, जिसे समाज से बहिष्कृत किया गया होगा। अगर किसी सदस्य ने मेरी जीवनी पढ़ी होगी, तो उसे जरूर पता होगा। उस समय डॉ. राम मनोहर लोहिया का बहुत असर था। उस समय " जात तोड़ो " आंदोलन चल रहा था और सामूहिक भोज चल रहे थे। चाहे अनुसूचित जाति के लोगों का खाना हो, चाहे बड़ी जाति के लोगों का खाना हो, चाहे पिछड़ी जाति के लोगों का खाना हो, उस सारे खाने को मिलाकर समाजवादी लोग खाना खाते थे। हमारा पूरा गांव समाजवादी था, लोहियावादी था। उन लोगों ने हमें बचाया। एक महीने तक लगातार हमें बहिष्कृत कर दिया गया। उस समय मेरा हाई स्कूल का एग्ज़ाम आ गया। मैं बहुत परेशान हो गया और मुझे गांव छोड़ना पड़ा। वे बहुत रईस आदमी थे, आर्य समाजी थे, उन्होंने मुझे अपने घर रख लिया। उसके बाद मैं अपना एग्ज़ाम दे पाया। दंड के तौर पर उस समय मुझे कहा गया कि दस क्विंटल पूरी खिलाओ, तब आपको समाज में मिलाया जाएगा। मैंने कहा कि एक क्विंटल पूरी नहीं खिलाऊंगा और मैं बहिष्कृत बना रहा। मैं स्वयं इस घटना का भुक्तभोगी हूं। वे कौन लोग थे, जो मेरा बहिष्कार कर रहे थे। यह सोचने का विषय है। मैं सदन में बताना नहीं चाहूंगा क्योंकि यहां शोरगुल हो जाएगा। तथाकथित वही लोग, सामंतवादी लोग और अपने को बड़ी जाति का कहने वाले लोगों ने मेरा बहिष्कार करवाया था। एक महीना समाप्त हुआ। उसके बाद हमें जाति में शामिल किया गया, तब तक हमारे साथ बहुत ज्यादा लोगों का समर्थन हो गया था। मैं भुक्तभोगी हूं, आप हमें पूछिए कि एक महीना क्या-क्या भोगना पड़ा होगा।

महोदय, आज बहुत अच्छे विषय पर बहस हो रही है। इसके लिए जिम्मेदार लोग यहां बैठे हैं। अगर यहां लोग मन बना लेंगे, तो भेदभाव खत्म हो जाएगा। धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर हम सभी ने यहाँ सदन में शपथ ग्रहण की है कि हम किसी भी स्तर पर भेदभाव नहीं करेंगे। हम और आप, सभी लोग यह शपथ ग्रहण करके सदन में आए हैं और हमें शपथ का पालन करना चाहिए। अगर देश और समाज को मजबूत करना चाहते हैं तो इस भेदभाव को दूर करना पड़ेगा। हमारे एक साथी ने सही कहा है कि देश को कई तरह के खतरे हैं। सीमा पर खतरा है, वहां कौन नहीं लड़ेगा, कौन देश के साथ नहीं रहेगा? यदि पूरा देश जब साथ रहेगा, तो खान-पान के नाम पर भेदभाव नहीं होगा । इसलिए हम समाजवादी लोग सामूहिक भोज करते थे। साक्षी महाराज बैठे हैं। इन्हें पता होगा कि सभी जाति के लोग चाहे ऊंची जाति के हों, नीची जाति के हों या पिछड़ी जाति के हों सभी लोगों का खाना मिला कर हम समाजवादी लोग खाते थे। उस समय हम लोगों ने "जात तोड़ो " आंदोलन चलाया था। आज बहुत अच्छी और महत्वपूर्ण विषय पर बहस की जा रही है। मैंने शुरू में ही बता दिया कि मैं भुक्तभोगी हूं। मेरा समाज से बहिष्कार किया गया था और बहिष्कार करके फिर कैसे मिलाया गया, यह तो एक लंबी कहानी है। हम आपसे यह कहना चाहते हैं कि आज आगरा को लेकर जो कुछ यहाँ हो रहा है, वह आगरा हमारा पड़ोसी जिला है। अब तो कुछ गांव वहां से निकल गए। आगरा जिले के कुछ गांव मेरे क्षेत्र में पड़ते थे। वहां हम पढ़े भी है, लेकिन यह हमारे ही इलाके की बात है। हमारे इलाके में, हमारे आस-पास के गांव में इसका कोई असर ही नहीं है। पता नहीं, यहां दिल्ली में इसका क्यों असर हो गया? बस, एक अदद अखबार पढ़-पढ़कर? कोई बता दे कि आगरा जिले में इसका कोई असर है? आगरा में इसका कोई असर नहीं है। हमारा पड़ोसी जिला इटावा में इसका असर नहीं है, लेकिन इस सदन में असर किस बात के लिए हुआ है कि इस पर इतनी गंभीर बहस हो रही है? बहस करके मुझे लगता है कि फिर इसे ऐसा कर दिया जाएगा कि फिर वास्तव में भेदभाव हो जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय, इसका वहां कोई असर नहीं है। हम वहीं के रहने वाले हैं। हमारे साथी भी वहीं के रहने वाले हैं। वहां कोई असर नहीं है। जाने क्यों यहां उसका असर हो गया और क्यों एक अखबार पढ़ कर यहां बहस शुरू हो गयी? क्या अखबारों के बल पर हम लोग यह सदन चलाएंगे? यह इतनी अनावश्यक बहस है कि इसका कोई सार्थक परिणाम नहीं निकलेगा। हम वहीं के रहने वाले हैं, वहीं की घटना है, वहीं के साक्षी महाराज पार्लियामेंट में हैं, हम सब वहीं के हैं। वहां कोई भेदभाव नहीं है। फिर बहस किस बात के लिए हो रही है, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

महोदय, हमें शंका है कि कहीं इस बहस का उलटा असर न हो जाए? इसका उलटा असर भी हो सकता है। अगर लोग सुनेंगे तो कहेंगे कि वहां भेदभाव होता है। अब भेदभाव कहां है? अब जाति तोड़ कर शादियां हो रही हैं, धर्म तोड़ कर शादियां हो रही हैं। हमारे यहां भी दो लोग हैं, जिन्होंने जाति तोड़ कर शादी की। हमारे लड़के की जाति तोड़ कर शादी हुई। मेरी भी जाति तोड़ कर शादी हुई। मेरी पहली पत्नी, (अखिलेश की मां) की डेथ हो गयी तो जब दूसरी शादी हुई तो जाति तोड़ कर शादी हुई। मैं कहना चाहता हूं कि हम लोग भुक्तभोगी हैं। पहले हमारा इस कुल से, बिरादरी से, समाज से बहिष्कार किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय, हम इस सदन के सभी साथियों से कहना चाहते हैं कि अगर समाज को, देश को मजबूत करना है तो जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, गरीबी-अमीरी के नाम पर, काले-गोरे के नाम पर भेदभाव न करें। आज काले-गोरे के नाम पर भेदभाव किया जाता है। मैं कह रहा हूं कि काले ऐसे-ऐसे विद्वान लोग हैं, जिनसे आप ने सीखा है। उनसे मेरा साथ रहा है। काले के नाम पर, गोरे के नाम पर, गरीबी के नाम पर, अमीरी के नाम पर, धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर भेदभाव किया जा रहा है। औरत और मर्द के नाम पर भेदभाव किया जा रहा है। महिला कितनी भी अच्छी हो, तब भी उसे दबा कर रखते हैं। हम लोग सब यहां बैठे हुए हैं। सब लोग अपनी पत्नी को थोड़ा-बहुत दबा कर रखे हुए हैं।

क्या वह आज़ाद हैं? क्या यहाँ बैठे हम सभी लोग अपनी-अपनी पत्नियों को आज़ादी दिए हुए हैं? आप खुद घूमते हैं और पत्नी पर शक करते हैं। असली यह है व्यावहारिक बात। यह सब देखना पड़ेगा, इसे करना पड़ेगा। हम लोग जिम्मेदार लोग हैं। यहाँ हम समाज की बात कर रहे हैं कि समाज में कितनी गिरावट है। यह सच है। अगर महिला को कहीं आने-जाने में देर हो जाए, रात हो जाए तो उससे जवाबतलब किया जाता है और आदमी बारह-एक बजे तक लौटे, तब भी उससे जवाबतलब नहीं किया जाता है। यह भेदभाव नहीं तो क्या है? समाज के इन सभी भेदभावों को दूर करने में, हम जैसे सारे लोग, जो यहां बैठे हैं, इनकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। यह काम करना चाहिए। अगर आप गांव में रहते हैं, मुहल्ले में रहते हैं, आपका बड़ा क्षेत्र है, पांच-पांच, छः-छः, सात-सात, आठ-आठ विधान सभाओं के क्षेत्र का हम लोग नेतृत्व करते हैं तो हम लोगों को इस आधार पर इसका कहीं सम्मेलन करना चाहिए। हम लोगों ने ऐसे बहुत सम्मेलन किये हैं। डॉ. राम मनोहर लोहिया ने जब जाति तोड़ो आंदोलन का ऐलान किया था, तब हमने बहुत सम्मेलन किया था। तब सब के घरों से खाना लाया जाता था।

हम तब सामूहिक भोज करते थे। उसका परिणाम यह हुआ कि सामूहिक भोज का समाज पर बहुत बड़ा असर पड़ा था। हम ज्यादा लम्बी बहस नहीं करना चाहते हैं। हम और आप जो यहां बैठे हुए लोग हैं, अगर इतने निकल पड़ेंगे, तो जरूर उससे कुछ होगा। आज समाज में एक ही तरह का भेदभाव नहीं है, जिस पर आज बहस हो रही है। काले-गोरे के नाम पर भेदभाव है। लड़की काली है, गोरी है या कैसी है, लम्बी है या छोटी है इस पर भेदभाव हो रहा है। शादियों में भेदभाव किया जाता है। अगर लड़की काली है तो लड़का शादी करने के लिए मना कर देता है। बुद्धि के नाम पर तो आप भेदभाव कर सकते हैं, लेकिन काले-गोरे के नाम पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। कई भेदभाव हैं, उन सारे भेदभावों पर हम लोग यहां संकल्प लें और एक प्रस्ताव पास करें। यह संकल्प लिया जाए कि किसी स्तर पर हम भेदभाव नहीं करेंगे, ऐसा प्रस्ताव बनाकर पास किया जाए। हम अपने साथियों से कहेंगे कि हम मिलकर एक प्रस्ताव पास करें। इससे देश के सामने एक संदेश जाएगा कि हम लोगों ने यहाँ सदन में एक प्रस्ताव पास किया है कि किसी स्तर पर हम भेदभाव नहीं करेंगे।

आपके सामने यही मेरे संक्षिप्त सुझाव हैं, धन्यवाद।

SHRI H.D. DEVEGOWDA (HASSAN): Thank you very much, Sir. You have given me an opportunity to speak on this controversial subject.

Sir, I have been in this House since 1991. I saw many events – what happened in Odisha; what happened in Madhya Pradesh; what happened in Gujarat. I do not want to give any citations just to convince this House.

The agenda of the Prime Minister is to see that various countries should come and invest for the development of this nation. It is not a development for one, it is not for one party, it is for the development of the nation.

My friend, Shri B.S. Yediyurappa is sitting here. We have given reservation – political reservation, economic reservation and job oriented reservation – to Muslim minorities. It is going on without disturbing the decision which I took in 1995. Till today there is no question on it. No political party in Karnataka tried to disturb the decision that I had taken in 1995.

Sir, I watched the proceedings today. I sincerely appeal to all the Members that the agenda of this Government is to bring the country forward in all aspects. If the Prime Minister wants to see the country developed from all aspects, then the division of society, to polarize it by any means is not going to help achieve what the Prime Minister is dreaming of. This is my sincere appeal to all my hon. colleagues.

I have never spoken anything on this aspect. I was sitting only on the back benches though the seat in the front row was allotted to me by the respected Speaker. My colleagues and senior leaders know it that we have not allowed any such things to happen in this country during 11 months. Let them find even a small incident anywhere in the country during that period. I do not want to use this opportunity to reveal the decisions I had taken with the support of my colleagues.

The Congress was supporting at that time, and we have taken several decisions. Next, I had gone to participate in the Presidential Address, and by that time some new development had taken place, namely, relationship between Mr. Lalu and Mr. Mulayam family. He is sitting here, and I am congratulating and saying that you should move forward to bring all these secular forces together.

With these words, I congratulate all the Members. The Chair has permitted me to speak now out-of-turn, and I am grateful for that. I am also grateful to the colleagues and senior Members of this House for allowing me this opportunity to speak after my senior leader spoke. Thank you very much, Sir.

HON. DEPUTY SPEAKER: I request other Members also that in the same way take 2-3 minutes to speak because we have to conclude by 5 o'clock and the Minister has to reply.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: The next speaker is Shri B. Vinod Kumar. You can take a maximum of 3 minutes to speak on this issue.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: We have already decided in the House that we will have a discussion on this issue for two hours, that is, from 3 o'clock to 5 o'clock. We have decided on this issue, and the decision has been taken. Therefore, within the time available, try to restrict your speech. Come to the point straightaway, and highlight whatever points that you want to make. Hence, I am requesting all of you to cooperate.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: We have decided two hours for this discussion, and the Minister, at that time, had said that he wants to reply and immediately take up some Bills also. Therefore, please cooperate and try to highlight the points that you want to mention. Senior Members also spoke only for 2-3 minutes each. Hence, please try to cooperate.

...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: The next speaker is Shri Konda Vishweshwar Reddy. Please be very brief.

SHRI KONDA VISHWESHWAR REDDY (CHEVELLA): Deputy-Speaker, Sir, thank you for the opportunity.

On such a sensitive issue with so much tension on both sides of the House, I actually stand very comforted because on the central idea of forced or lured conversion or conversions under undue influence, I think that both sides of the House agree that they are undesirable for our country. Actually, I feel that we, as a country, are a little bit strengthened after this discussion.

I think that our discussion should only focus on what is it that we call lured conversion. Is it a ration card or is it a job in the Middle-East or is it an admission to a convent school or hostel? I think that this is the only thing under discussion. I am extremely happy that every Member, as also our Party, agrees that we do not believe in forced or lured conversions. Thank you, Sir.

HON. DEPUTY SPEAKER: Yes, every Member can speak like this.

Now, the next speaker is Shri Mohammad Salim. Similarly, you also try to be very brief.

...(*Interruptions*)

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): No, it cannot be like that. You believe in diversity. All of us are not the same. Thank you.

श्री मोहम्मद सलीम : उपाध्यक्ष महोदय, काफी चर्चाओं के बाद यह चर्चा हो रही है। यह बहुत गंभीर मामला है। आगरा में वह घटना हुई है। पूरे विश्व में आगरा को लोग प्रेम के प्रतीक, ताजमहल के लिए जानते हैं। अब तो वहां एक ऐसा माहौल बनाया जा रहा है, ...(व्यवधान) यह ज्यादा बड़ा नहीं है।...(व्यवधान) सवाल हमारे संविधान और जो कांस्टीटयूशनल प्रोप्रायरिटीज है, उसके साथ जुड़ा हुआ है। यहां चर्चा हो रही है। सभी लोग अपनी-अपनी बातें रख रहे हैं, उससे नजरिया पता चलता है कि हम किस ओर जा रहे हैं।

एक तरफ हमारे प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि विवादास्पद मामलों को 10 साल तक, जिनकी उन्होंने लाल किले से घोषणा की, विकास के लिए चलें, सबके साथ चलें, सबके लिए चलें, उसके बावजूद भी जब पुणे में नौजवान सिद्दी की हत्या होती है और उसके बाद एक के बाद एक, चाहे आप कोई भी नाम दीजिए, मैं घटनाओं का विवरण नहीं दूंगा, समय कम है, एक पड़ाव आगरा है। यह जो फोर्स कंवर्जन है ल्यूर्ड कंवर्जन है, चाहे वह लालच से हो या भय से हो, हमारा संविधान, लोकतांत्रिक परंपरा, हमारा सामाजिक दर्शन और हमारा राजनीतिक दर्शन उस बात की इजाजत नहीं देते हैं। लेकिन इस देश में एक नई दुविधा हमारे शासक दल के लिए है। एक तरफ हम स्मार्ट सिटी की बात कर रहे हैं और दूसरी तरफ बर्निंग स्लम्स की बात कर रहे हैं। दो मुंह हैं, यह नहीं होना चाहिए। मुलायम जी ने कहा कि हमारे परिवार में इंटरकास्ट मैरिज हुई, कोई भेदभाव नहीं है। अभी बीजेपी के सांसद कह रहे थे टेल ऑफ टू सिटीज़। हर शहर, हर इलाके में, हमारे मुल्क में भी दो तरह की व्यवस्था हो रही है। आप ऊंचे महलों में, ऊपर कोई परेशानी नहीं है, लेकिन कन्वर्जन रैग पिकर्स का हुआ, जिनकी सामाजिक सुरक्षा नहीं है, जिनका राशन कार्ड नहीं है, आधार कार्ड नहीं है, वोटर लिस्ट में नाम नहीं होता, जिनकी जुबान अगर बंगला है और वे बंगाल के गांव से आए हैं, बिहार से आए हैं, मुम्बई में हों या और किसी और शहर में हों, तो उन्हें कहा जाएगा कि यह बंगलादेशी है और भय का वातावरण बनाया जाएगा। उसके बाद कहा जाएगा कि धर्म के नाम पर आपको हम गोली दे रहे हैं। अगर इसे खा लेते हैं तो आपकी एंटी-बायटिक हो गई। यह हमारे सैकुलर मुल्क में सरासर गलत है और सदन को इसके विरोध में अपना मत प्रकट करना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमारे जो मित्र यहां बैठे हुए हैं, वे यह सब कर रहे हैं। लेकिन तरह-तरह के लोग हैं। सरकार, प्रधान मंत्री, गृह मंत्री की जिम्मेदारी है, शासक दल के सर्वोच्च नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि जो ...* उन्हें थोड़ा नियंत्रण में रखें। यह देश के लिए अच्छा है, सरकार के लिए अच्छा है और सरकार जो मंशा लेकर चल रही है, उसके लिए भी ठीक है। मैं धर्म की बात नहीं छेड़ रहा हूं। उसके बारे में बहुत बातें कह दी गई हैं। इसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और शासकीय पहलू हैं। मैं इतनी बातें नहीं कहूंगा, लेकिन यह अजीब दास्तान है।

अभी बीजेपी के महाराज जी ने जो कहा, मैं स्वामी जी इसलिए नहीं कहता क्योंकि हम बंगाल के लोग इस बारे में बहुत चूजी होते हैं। भगवा पगड़ी पहन लेने से लोग स्वामी नहीं हो जाते। स्वामी विवेकानंद को स्वामी जी कहते हैं। ...(व्यवधान) आप मेरी बात सुन लीजिए।...(व्यवधान) आप धैर्य रखिए।...(व्यवधान) मैं अपनी संस्कृति की बात कर रहा हूं।...(व्यवधान) इसमें आपको क्या आपत्ति है।...(व्यवधान) क्या स्वामी जी नहीं बनते? मैं कह रहा हूं, मैं विश्वास करता हूं, आप भी कीजिए।...(व्यवधान) मैं सबको नेताजी नहीं कहता, सुभाष चंद्र बोस को कहता हूं।...(व्यवधान) महोदय, इन्हें समझ नहीं है, इसलिए बोल रहे हैं। ये यहां ऐसे करते हैं तो बाहर क्या करेंगे।...(व्यवधान) मैं कह रहा हूं कि मैं बंगाल से आता हूं। हम इस बारे में अपना पक्ष रखेंगे या नहीं?...(व्यवधान) हम सबको गांधी जी नहीं कहते, सिर्फ महात्मा गांधी को गांधी जी कहते हैं।...(व्यवधान) इसमें क्या बुराई है। हम सबको स्वामी जी नहीं कहते, सिर्फ विवेकानंद को कहते हैं। यह हमारी समझ है। ...(व्यवधान) यही अंतर है। अपनी समझ को दूसरे के ऊपर मत लादिए।...(व्यवधान) हमने बहुत लड़कर यह चर्चा ली है। चर्चा सुननी पड़ेगी। सुनने के लिए कान खुले रखिए।...(व्यवधान) अगर बीजेपी के महान् सदस्य यह कहें कि यह सामान्य घटना है...(व्यवधान) बहस हो रही है।...(व्यवधान) फिर मीनाक्षीपुरम का मामला कहा।...(व्यवधान) हमने नहीं उठाया।...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: You address the Chair.

...(*Interruptions*)

SHRI MOHAMMAD SALIM : You silence them....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: First you address the Chair.

...(*Interruptions*)

SHRI MOHAMMAD SALIM : You silence them....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: I know how to handle. Please do not provoke.

...(*Interruptions*)

श्री मोहम्मद सलीम : यही सोच, यही गलत समझ है कि अपनी बात ठीक है और दूसरे की बात गलत है।...(व्यवधान) आप बात तो सुनिए।...(व्यवधान) तर्क करना नहीं जानते, संसद में पहुंचे हैं।

The Member has said that it is an ordinary matter. That is right. What happened in Agra is an ordinary matter. Then, he referred to Meenakshipuram. He said that Advaniji took the matter in this House. मीनाक्षीपुरम में जब कन्वर्शन हुआ, उसको लेकर आडवाणी जी ससंद में चर्चा कर सकते हैं, उस वक्त यह सामान्य मामला नहीं रहता, आगरा में जब होता है, जब हम चर्चा करने की बात करते हैं तो क्या यह सामान्य मामला है, यही तो दोहरी चाल है, वह भी गलत, यह भी गलत, ऐसा कहिए। दूसरी बात है, सुनने के लिए कान खुले रखिए, भगवान ने जब तुम्हें बनाया एक मुंह दिया, दो कान दिया, दोनों से काम लें, यह देश गुरू नानक का है, कबीर का है, बुल्लेशाह का है, बाबा फरीद का है, लालन का है, श्री कृष्ण चैतन्य का है, विवेकानन्द का है, धर्म के बारे में हम ऐतिहासिक पुरूष की बात कर रहे है।

HON. DEPUTY SPEAKER: That is the problem. You address the Chair. You are getting diverted.

श्री मोहम्मद सलीम : कबीर का दोहा है हिन्दू कहो तो नाही, मुसलमां भी नाही, पांच तत्वों का पुतला दैवी खेले माही इस देश में पांच सौ साल पहले संत कबीर ने यह कहा। आज हम क्या कर रहे हैं। बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर का कहना है कि धर्म परिवर्तन करने से उपासना का तरीका बदलता है, लेकिन उसका सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति नहीं बदलती। इसलिए हजारों दलितों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। अगर हम सामाजिक, राजनीतिक और शासकीय स्थिति को नहीं बदलते हैं, यह हमारे लिए चुनौती है, हम लालच देकर, भय दिखाकर उपासना का तरीका बदलते हैं, इसको क्या कह रहे हैं, शुद्धि। अच्छी बात है। प्यूरिफाई। अगर शुद्धि करना है इस दिल्ली में, इस देश में करो। दवाई में मिलावट होती है, दूध में होती है, मिठाई में हो रही है, तेल में हो रही है, घी में हो रही है, ऑफटरऑल, यज्ञ करके वहां शुद्धि कर दो। अगर आप धर्म के नाम पर कुछ गरीब मुसलमानों को लालच देकर यज्ञ करके कहते हैं कि धर्म परिवर्तन कर लिया तो शुद्धि हो गया तो मिलावट में भी थोड़ी शुद्धि कर दो। इस देश में सरकार के अंदर यह ताकत होना चाहिए कि Purify the system, purify the *Tantra*. ...(व्यवधान) तंत्र को शुद्ध कीजिए, यह आगरा का मामला नहीं है, यहां से मामला बंगाल तक जाएगा, पूर्वोत्तर भारत तक जाएगा, इसलिए इसको रोकना जरूरी है। सरकारी योजना, आधार कार्ड, राशन कार्ड ये सब नागरिकों के अधिकार हैं। बजरंग दल के कार्यकर्ता कैसे बोल सकते हैं कि तुम हमारे साथ आओ, हमारा झंडा पकड़ो, तो हम तुम्हें ये सुविधाएं देंगे। यह तो शासन का राजनीतिकरण हो रहा है। आपको सोचना चाहिए कि यह सब नागरिकों का अधिकार है। स्वच्छता सिर्फ झाड़ू लगाने से नहीं होगी, अपने दिमाग में झाड़ू मारो, समझ में झाड़ू मारो, सोच में झाड़ू मारो, दृष्टिकोण में झाड़ू मारो, नजरिए में झाड़ू मारो, ...(व्यवधान) उसके बाद उसको सुधारो, तभी शुद्धिकरण होगा।

SHRI MEKAPATI RAJA MOHAN REDDY (NELLORE): Thank you Deputy Speaker Sir for giving me an opportunity to speak on this issue. Our party is of the view that nothing should be done by coercion or by pressure or by force taking the advantage of somebody's backwardness or poverty.

First of all, we should all think that we are all Indians then, we belong to some caste or religion. Nobody should try to harm the integrity and unity of this country. That is our party's view.

SHRI M. MURLI MOHAN (RAJAHMUNDRY): Sir, I would like to speak in Telugu.

HON. DEPUTY SPEAKER: I want to bring it your notice that there is no translator available at the moment. I will call you when the translator is available.

श्री तारिक अनवर (कटिहार): उपाध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र में देश में बढ़ती हुई साप्रदायिकता पर बहस हुई थी, जिसमें सब लोगों ने अपनी-अपनी राय दी थी। लेकिन आज फिर कुछ ही समय बाद इस सदन में देश की जो वर्तमान परिस्थिति है, देश का माहौल बिगाड़ने का प्रयास हो रहा है, उस पर हम फिर से बहस करने के लिए मजबूर हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, हमारा देश का संविधान इस बात की इजाजत नहीं देता कि जबरदस्ती, दबाव या लालच देकर किसी का धर्म परिवर्तन किया जाये। हमारे देश की परम्परा है कि हम सर्वधर्म सम्भाव में विश्वास रखते हैं। हम अपने आपको गांधी जी का ...(व्यवधान) आज हम सब लोग अपने आपको गांधी जी का अनुयायी कहते हैं और गांधी जी ने यही सिखाया था कि हम सर्वधर्म सम्भाव को लेकर चलें, क्योंकि दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां दुनिया के सभी धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं। यहां अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं, अलग-अलग संस्कृति और संस्कार हैं। उन सबको मिलाकर भारत बना है। लेकिन हमारी जो गंगा-जमुनी तहजीब है, आज उस पर आघात पहुंचाने की कोशिश हो रही है। हमारा जो बुनियादी ढांचा है, आज उस पर प्रहार किया जा रहा है और यह यूं ही नहीं हो रहा, एक सोची समझी साजिश के तहत हो रहा है। देश के तमाम बुद्धिजीवी वर्ग, समाचार-पत्र, मीडिया आदि सभी ने इस बात की आलोचना की। सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। हमें अपनी स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई नहीं भूलनी चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई हम तभी जीत पाये थे, जब हम सब लोग एक हुए, क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य इस बात को अच्छी तरह समझता था। उसने हमेशा हिन्दू और मुसलमानों को बांटकर रखा। बांटो और राज करो, उसी फार्मूले पर उसने यहां सैंकड़ों सालों तक राज किया। क्या आज हम फिर उसी दिशा में जा रहे हैं? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। आज लोग इस बात को देख रहे हैं, महसूस कर रहे हैं। देश की एकता और अखंडता की कीमत पर हम अपनी राजनीति करना चाहते हैं.

उपाध्यक्ष महोदय, हमें नहीं भूलना चाहिए कि देश व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर होता है और किसी भी कीमत पर देश को किसी तरह का नुकसान न हो, इस बात का ध्यान हमें रखना चाहिए। ऐसा लगता है कि आज हमारे देश में तालिबानी हुक्म चल रहा है। आज हमारे देश में फ़रमान जारी होता है। कौन सा धर्म अपनाना है, कौन सी भाषा बोलनी है, कौन सा लिबाज़ पहनना है, लड़कियों को कैसी पोशाक पहननी है, आज हमारे देश में इस तरह के फरमान जारी हो रहे हैं। यह हमारे लिए बहुत चिंता का विषय है। भारत के संविधान के तहत किसी पर दबाव डालकर प्रलोभन देकर धर्मान्तरण करना गैरकानूनी है। आगरा में जो कुछ हुआ, सारे अखबारों में इसकी खबर विस्तार से छपी, मुझे इसकी गहराई में नहीं जाना है। जिन लोगों का धर्म परिवर्तन हुआ, उन्होंने उस घटना के बाद कहा कि हम सबको लालच दिया गया, बीपीएल कार्ड देने की बात कही गई, राशन कार्ड देने की बात कही गई। उन्होंने यहां तक कहा कि हम लोग अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

हमने एक ही दिन पूर्व दुनिया में मानवाधिकार दिवस मनाया है और आज हमारे देश में मानवाधिकार का हनन हो रहा है। इस पर चिंता करने की जरूरत है। समाज को धार्मिक आधार पर बांटना और प्रयास करना बिल्कुल गलत होगा। भाजपा के जिम्मेदार लोगों द्वारा आपत्तिजनक भाषा का खुलेआम प्रयोग किया जा रहा है और ऐसे लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। यह समझ में नहीं आ रहा है कि माननीय प्रधानमंत्री कहां कमजोर पड़ रहे हैं? उन्होंने 15 अगस्त को लालकिले से कहा था, उस पर भी लोगों का ध्यान नहीं है। वैंकेय्या नायडू जी ने राज्य सभा में जो बात कही, मैं उसे दोहराना चाहता हूं कि जबरन धर्मान्तरण नहीं होना चाहिए, प्रलोभन भी नहीं दिया जाना चाहिए। सरकार ने धर्मान्तरण मामले में सफाई देते हुए कहा कि इस तरह के विवाद के लिए केंद्र सरकार को कटघरे में खड़ा करना मुनासिब नहीं है। इस पूरे मामले में जिस तरह आरएसएस के प्रवक्ता का बयान आया, बजरंग दल का बयान आया और विश्व हिंदू परिषद् का बयान आया, अगर आप ऐसा कहते हैं तो मैं सरकार से जानना चाहता हूं और यह सदन भी जानना चाहेगा कि क्या इनका कोई संबंध भाजपा से है या नहीं?

मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि हम बहुत कठिन समय से गुजर रहे हैं। हमें इन चीजों को हल्केपन से नहीं लेना चाहिए। यह एक ऐसी आग है जो हम सबको जलाकर राख कर देगी। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि आग लगाने के लिए माचिस की एक तीली ही काफी होती है लेकिन आग बुझाने में सालों लग जाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। हम लोगों ने इसकी कीमत पहले भी चुकाई है जब 1947 में देश का बंटवारा हुआ था। हमें ऐसी स्थिति दोबारा नहीं होने देनी है। हम लोगों को यही कोशिश करनी चाहिए, 'सर्व धर्म समभाव' का देश में माहौल रहा है, गंगा-यमुना तहजीब का जो माहौल रहा है, उसे हर कीमत पर बचाना है। अंत में, मैं उर्दू का शेर कहना चाहता हूं।

वो दौर भी देखा है तारीख़ की नजरों ने, लम्हों ने खता की थी सदियों ने सज़ा पाई।

यह स्थिति नहीं आनी चाहिए कि हम राजनीतिक स्वार्थ में इतने अंधे हो जाएं कि देश के भविष्य की चिंता न हो। यह उचित नहीं होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात कहना चाहता हूं कि सरकार अपने रवैये में तब्दीली लाए। ऐसे तमाम संगठन इस तरह से देश में माहौल बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं, उनके खिलाफ सख्ती से कार्यवाही करे। धन्यवाद।

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri Venugopal, I have received your request. The name of the Chief Minister will be removed from the record.

SHRI K.C. VENUGOPAL(ALAPPUZHA) : Sir, it should be expunged.

HON. DEPUTY-SPEAKER: The name of the Chief Minister will be removed. The whole text cannot be removed.

SHRI K.C. VENUGOPAL : Sir, he has misquoted the Chief Minister....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: You can reply when your turn comes.

SHRI K.C. VENUGOPAL : Sir, he has misquoted the Chief Minister and it should be expunged.

HON. DEPUTY-SPEAKER: It has to be verified. I will verify it. The name of the Chief Minister will not go on record and with regard to the other things I will verify it.

...(*Interruptions*)

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT, MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Mr. Deputy-Speaker, Sir, if there is a reference to a Chief Minister, who is not here, that name should not go on record.

HON. DEPUTY-SPEAKER: The name has been removed from the record. They are objecting to some text also which I will verify.

Shri Murli Mohan.

*__*__**SHRI M. MURALI MOHAN (RAJAHMUNDRY):** There are senior members in this House who have experience of 20 to 30 years. This is a sacred place and I feel that we should not waste time on discussing such a small and sensitive issue. I would like to quote one example here. My name is Murali Mohan. My son addresses as 'Babu'. My younger brother addresses me as 'Annayya', my elder sister addresses me as 'Thammudu'. My brother-in-law addresses me as 'Baavagaru' and my nephew addresses me as 'Maavayya'. My wife addresses me as 'Emandi' and my grand daughter addresses me as 'Thaathayya'. Let them address me by any name, I am only one. Similarly, if we say Allah, Jesus, Rama or Gautama Buddha, God is only one. He does not have any religion, caste, groups or discrimination. We should remember this and work towards progress of our holy country. I heartily feel that these are small issues on which we should not fight.

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : उपाध्यक्ष महोदय, सही मायने में कहा जाए तो जो बातें आई है जबरन धर्मांतरण देश में यह बहस होती क्यों है? उसके लिए कौन जिम्मेदार है? ये जो बातें आयीं, राजनीतिज्ञों से बड़ा जिम्मेदार इंसान, जाति-धर्म, मज़हब को इस देश में लाने वाला है कौन, उसके अलावा कोई है ही नहीं इस देश में। यह बहुत बड़ा विषय है, लेकिन मैं उसमें नहीं जाऊँगा। मैं अपने भाजपा के मित्रों से कहना चाहूंगा कि एक तरफ पाकिस्तान की बेटी मलाला यूसुफज़ई और हमारे कैलाश सत्यार्थी जी जिस तरह से नोबल पुरस्कार पाकर अमन और शांति का पैगाम देते हैं और पाकिस्तान जैसे देश में रहकर वह कट्टरवाद को चैलेंज करती है, क्या हिन्दुस्तान की कोई बेटी और कोई नौज़वान यहाँ के कट्टरवाद को चैलेंज करने की ताकत नहीं रखता है? क्या यह बहुत बड़ा सवाल नहीं है? संत जी ने " सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः " की बात कही है। हमारा अध्यात्म क्या कहता है? " वसुधैव कुटुम्बकम् " और सार्वभौम समाज पर हमारा सब कुछ निर्भर नहीं करता।

" सं गच्छध्वं सं वदध्वं संवो मनांसि जानताम्,
देवाः भाग्यम् यथा पूर्वेः संजानानाम उपासते,
समानी वयाकृतः समाना हृदयानि वः,

समानमस्तुं वो मनो यथा वः सुसाहसति। "

साथ चलना, साथ-साथ जीना और सबको साथ-साथ रहने की ताकत देता है हमारा अध्यात्म। हमारा अध्यात्म यही नहीं कहता, वह कहता है-

"अखण्ड-मंडलाकारम् व्याप्तं येन चराचरम्,

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः,

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया,

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः। "

आपने जिस आर्य सभ्यता की बात कही है, मैं उन हिन्दुओं से पूछना चाहता हूं कि क्या दो सौ साल पहले इस देश के मुसलमान या इसाई ने राजस्थान और मुम्बई में रहने वाले गरीब दलितों को थूक फेंकने पर पाबंदी लगायी थी, वह कोई मुसलमान नहीं था, वह हिन्दुस्तान का कोई पैसे वाला सामंती हिन्दू ही था। जब चलने पर झाड़ू दिया जाता था, जब गरीब और दलितों को हिन्दुस्तान में चलने की आज़ादी नहीं थी और घोड़े पर बैठने की आज़ादी नहीं थी।

17.00 hrs

आज भी राजस्थान, ओडिशा और कई जगहों पर मंदिर में प्रवेश करने की गरीबों को, दलितों को आजादी नहीं है।...(व्यवधान) जिस हिन्दुस्तान में पी.एल.पुनिया, चेयरमैन को मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है, ताला लगाकर पंडित भाग जाते हैं, जिस हिन्दुस्तान में राजा-महराजा और जमींदारों के सामने घोड़े पर बैठने और अपनी शादी में पगड़ी पहनने की इजाजत नहीं दी जाती हो, वहां हिन्दुत्व की बात करने का कोई मतलब नहीं है।...(व्यवधान) जो लोग हिन्दू धर्म के ठेकेदार बनते हैं, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में दो हजार दलितों ने अभी सिर्फ आडम्बर और कर्मकाण्ड के चलते, हमारे ही लोगों द्वारा सताए जाने के चलते बदलाव कर लिया।...(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूं कि एक दिन में जो नौ लाख दलितों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, क्या ईसाई और मुसलमानों के तंग करने के कारण किया था? इस भौतिकवादी और बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं की शक्ति, आडम्बर और कर्मकाण्ड पर चोट करने के कारण उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। ...(व्यवधान) मैं सम्मान करता हूं, आप देश चलाने के लिए आए हैं, लेकिन आपकी कथनी-करनी में फर्क क्यों है?...(व्यवधान)

आप शुरू से देखिए - लव जिहाद, लव किस, क्या-क्या हुआ।...(व्यवधान) आप कहते हैं कि इस देश में 650 से 700 दंगे हुए। दंगाइयों का आप सम्मान करते हैं और मंत्री बनाते हैं, आप अल्पसंख्यकों को पाकिस्तान भगाने का नारे देने वाले वाले को मंत्री बनाते हैं, आप उनका सम्मान करते हैं। आप कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ? कल तीन टी.वी. चैनल्स - इंडिया टी.वी., आज तक और आई.बी.एन. - पर दिखाया गया है। कृष्ण से बड़ा कोई हिन्दू, यादव से बड़ा कोई हिन्दू संस्कृति पर मरने वाला व्यक्ति होगा? मैं गर्व से कहता हूं, क्या कहा, कहा गया कि राजपाट मेरा है, जिस तरीके से तुम गए हो, खून की नदियां बहा देंगे, यदि तुम लौटकर नहीं आओगे। हम एक-एक को चुन-चुनकर मारेंगे, हिन्दुस्तान में तुमको वापस आना पड़ेगा। यह बात टी.वी. पर कही गयी है। तब मैंने नोटस दी। मेरे नोटिस देने का कोई मतलब नहीं था। मैंने यह नहीं देखा कि कौन क्या बोलता है? वैंकैय्या नायडू साहब मैं आपका सम्मान करता हूं, मैं किसी दल को गाली नहीं देना चाहता हूं, लेकिन देश कैसे बचेगा।...(व्यवधान) मैं एक मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा।

नेहरु जी और गांधी जी ने कहा था कि जब तक देश जाति और धर्म के नाम पर रक्तरंजित होगा, जब तक गरीब का सम्मान नहीं होगा, जब तक नक्सलवाद को भूख की वजह से बढ़ावा मिलेगा, तब तक हिन्दुस्तान की तरक्की नहीं हो सक्ती है। जाति और धर्म के नाम पर आप जब तक देश को रक्तरंजित करेंगे, तब तक हिन्दुस्तान का सम्मान नहीं हो सकता है।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): उपाध्यक्ष महोदय, जिस घटना के बहाने यह चर्चा इस सदन में हो रही है, वह घटना वास्तव में उतनी बड़ी नहीं है। यदि देश के अंदर संविधान पूजा पद्धति के पालन, उसके संबंध में प्रचार करने की छूट देता है और यदि स्वेच्छा से कोई व्यक्ति किसी अन्य पूजा पद्धति या धर्म में जाता है तो इस घटना को स्वाभाविक रूप से देखना चाहिए, उसके संबंध में इतना बड़ा हंगामा करने की जरूरत नहीं थी। फिर भी, इस घटना के बहाने जो चर्चा यहां हुई है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं यह मानता हूं कि एक-दो घण्टे की चर्चा में यह बात निकलकर शायद नहीं आएगी कि वास्तव में इस देश की समस्या क्या है। यहां बातें बहुत अच्छी बोली जा रही हैं, बोली जानी चाहिए, लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि इन बातों को कहते हुए इस देश का विभाजन हुआ। इन बातों को कहते-सुनते हुए कश्मीर के अंदर एक धर्म विशेष के लोगों को पूरी तरह से घर छोड़ने को मजबूर कर दिया गया। ये दो तथ्य ऐसे हैं, जिनको ध्यान में रखकर हमें थोड़ी सी गंभीरता से इस समस्या पर विचार करना चाहिए। अभी काफी देर से हमारे कई माननीय सदस्यों ने अपनी बातें रखी हैं। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि इतिहास है। इतिहास को आप नज़रअंदाज नहीं कर सकते। इतिहास की आप उपेक्षा नहीं कर सकते, इतिहास की आप अमर्यादा नहीं कर सकते। इतिहास को समझे बगैर हम समस्या का हल भी नहीं निकाल सकते।...(व्यवधान) सुन लीजिए। जिस समय पश्चिमी सीमाओं पर इस्लाम के आक्रमण हुए, आप मुझे क्षमा करिएगा, गंभीर बहस के लिए थोड़े अच्छे ढंग से सुनने का धैर्य भी होना चाहिए। ...(व्यवधान) जो आक्रमण हुए, हिन्दुस्तान के लिए कई प्रकार से वह पहला अनुभव था। हिन्दुस्तान में कोई भी हमारे यहां आया, दुनिया से अपमानित होकर लोग हमारे यहां आए, हमने उनको कलेजे से लगाया। यदि मैं एक पारसी समाज का जिक्र करूं, उनके योगदान को मैं प्रणाम करता हं तथा सारा देश प्रणाम करता है। आज उनकी संख्या बढ़ें, उनकी संख्या कम न हो, इसके लिए भी मैं समझता हं कि केन्द्र से

प्रयास हो रहे हैं। हम लोगों ने तो कलेजे से लगाया। हमारे लिए यह बात बड़ी नयी थी कि जब इस प्रकार के लोग आए और उन्होंने धर्म और पूजा-पद्धति के आधार पर धर्म-स्थानों को तोड़ना शुरु किया। बलात धर्म-परिवर्तन के प्रयास शुरु किये। हमारे लिए यह बात बिल्कुल नयी थी और मैं किसी एक घटना में नहीं जाना चाहता। तब से लेकर जब आठवीं शताब्दी में पहला आक्रमण हुआ, उसके बाद तक के आप सारे प्रकरण देखते जाइए, यह इतिहास हमारा पीछा नहीं छोड़ता है। आप बनारस जाइए, आप काशी जाइए, मैं काशी जाता हूं, मुझे तकलीफ होती है जब मैं देखता हूं कि किसी समय वहां पर बाबा विश्वनाथ के मंदिर को किसी धर्मान्ध शासक ने तोड़कर वहां पर मस्जिद बनाई थी। क्यों बनाई थी? इसकी क्या जरूरत थी? मुझे चिंता होती है।

यहां आप कुतुब मीनार के पास जाइए, वहां भी एक इतिहास का शिलालेख लगा हुआ है कि 24 जैन मंदिरों को तोड़कर जो मस्जिद बनाई गई, उस पर लिखा हुआ है: "कुव्वतुल-इस्लाम"। इस बात की क्या जरूरत थी? मैं बहुत विनम्रता से इस बात को कहना चाहता हूं कि इस प्रकार का इतिहास आपका पीछा नहीं छोड़ेगा। यह इतिहास लोक कथाओं में है, लोक नाटक में है और यह इतिहास लोक संगीत में है। यह इतिहास सब जगह है। हमने इस इतिहास की उपेक्षा की। इसको ठीक से एड्रैस नहीं किया और उसका दुष्परिणाम यह हुआ कि एक तरफ देश बंटा और दूसरी तरफ कश्मीर जैसी घटना घटी। हमें इस समस्या को एड्रैस करना पड़ेगा। जब तक हम इस समस्या को एड्रैस नहीं करेंगे, जब तक हम इसका संज्ञान लेकर हल नहीं ढूंढ़ेंगे, तब तक इस समस्या का हल नहीं होगा।

माननीय उपाध्यक्ष जी, आप जहां बैठे हुए हैं, यहां सामने लिखा है: धर्म चक्र प्रवर्तनाय, यह कौन सा धर्म-चक्र है? यह कौन सा धर्म है? यह धर्म सर्वे भवन्तु सुखिना का है। हमारे कई मित्रों ने इसका उल्लेख किया है। यह धर्म है: माता भूमि, पुत्रोअहम् पृथिव्या। यह धर्म है कि सारा का सारा विश्व एक है। यह धर्म सर्वे भवन्तु सुखिना है और इस धर्म के आधार पर हम जिस चिंतन को आगे बढ़ाते हैं, उस चिंतन के कारण इस देश में धर्मनिरपेक्षता, सैकुलरिज्म है। इस बात पर सारा सदन जरा गंभीरता से सोचे कि क्या आप इस विषय को समाप्त करना चाहते हैं? क्या आप इस विचारधारा को समाप्त करना चाहते हैं? यह हमारे लिए गर्व की बात है परन्तु क्या हम छोटे-छोटे वोट बैंक की राजनीति के चलते इस प्रकार के विवादों में उलझ जाएंगे और इस देश की जो मूल आत्मा है, क्या उसका हम तिरस्कार करना शुरु कर देंगे? ...(व्यवधान) इसकी मूल आत्मा यह है कि मेरा विचार भी अच्छा है और आपका विचार भी ठीक हो सकता है। यह इसकी मूल आत्मा है। यह बात हमने हमेशा कही है। अभी मेरे मित्र मलाला का जिक्र कर रहे थे। मलाला किसके खिलाफ लड़ी थीं? मलाला तालीबान के खिलाफ लड़ी थीं। मैं पूछना चाहता हूं हम तालीबान का अनुसरण करेंगे कि मलाला का अनुसरण करेंगे?...(व्यवधान) हम इस देश के अंदर उन लोगों का अनुसरण करेंगे जो सबको साथ लेकर चलने की कोशिश करते हैं या फिर उन लोगों का अनुसरण करेंगे जो साप्रदायिकता की बात करते हैं?...(व्यवधान) हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने कभी भी, किसी समय भी 125 करोड़ लोगों से कम की बात नहीं की। मैं इस बात को कहना चाहता हूं कि आखिर वह कौन प्रधान मंत्री थे, उनकी क्या निष्ठा थी, उनकी क्या समझदारी थी कि उन्होंने कहा कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुस्लिमों का है। उत्तर प्रदेश में क्या होता है, उत्तर प्रदेश में यही होता है। मैं माननीय मुलायम सिंह जी का बहुत आदर करता हूं, वह जमीन से जुड़े हुए, अथक परिश्रमी नेता हैं, लेकिन आज उनकी भाषा बदली हुई थी। आज जब सवेरे वह चर्चा की डिमांड कर रहे थे तो उनकी भाषा दूसरी थी, आज उनकी भाषा बदली हुई थी। मैं उनकी बदली भाषा का अभिनंदन करता हूं। लेकिन उत्तर प्रदेश के अंदर जो कुछ हो रहा है, वह वही हो रहा है, जो सप्रदाय के आधार पर, पूजा पद्धति के आधार पर भेद करता है।

मेरा कहना यह है कि जिन दिनों चुनाव प्रचार चल रहा था तो मीडिया के लोग नरेन्द्र भाई से पूछते थे, जो आज हमारे प्रधान मंत्री हैं, सबकी सुरक्षा का क्या होगा, वह बोले सबकी सुरक्षा होगी। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का क्या होगा तो उन्होंने यह कहा कि देश का एक व्यक्ति भी यदि दुखी है, यदि परेशान है, यदि आक्रमण के अंदर है तो उसकी सुरक्षा हम करेंगे। यह स्पिरिट है, यही होना चाहिए। यह जो हमने लोगों को हिन्दू-मुस्लिमों में बांट रखा है, उसकी वजह से दिक्कतें हो रही हैं।

महोदय, आपका आग्रह हो रहा है, हालांकि मैं और बोलना चाहता था, लेकिन मैं एक शेर कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं। गुलाम अली साहब की एक बड़ी अच्छी गजल का यह शेर है - "सूरज में लगे धब्बा, कुदरत के करिश्मे हैं, बुत हमको कहें काफिर अल्लाह की मर्जी है।" इन लोगों को, बंदों को वह अक्ल दे, मेरी यही प्रार्थना है।

श्री मुलायम सिंह यादव : क्या आपने चुंगी समाप्त नहीं करवाई, आप मुसलमान, मुसलमान क्या बोल रहे हैं, आप बाकायदा व्यापारियों के लिए काम करवा रहे हो।...(व्यवधान)

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (आनंदपुर साहिब) : माननीय डिप्टी स्पीकर साहब, इस देश की खूबसूरती है कि देश एक है, धर्म अनेक हैं, देश एक है, भाषाएं अनेक हैं, देश एक सदाचार अनेक हैं। इस देश में ऋषियों, मुनियों, फकीरों और पैगम्बरों ने जो संदेश दिया, हमारे पूर्वज उन पर चलकर इस देश को आगे लेकर गये। मैं कहना चाहता हूं कि अगर इस देश को आगे ले जाना है, इस देश का विकास करना है, इस देश में सदभावना रखनी है तो स्लोगन्स यहां भी बहुत सारे मित्रों ने बोले हैं, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, रलमिल बैठो भाई-भाई। हमें उस पर अमली रूप में चलना होगा और मैं स्वामी जी की बात से सहमत हूं, सलीम भाई माने या न माने, लेकिन मैं उन्हें स्वामी जी मानता हूं। जो स्वामी जी ने कहा है कि हमें अपने त्याग से सीखना चाहिए। इस देश का इतिहास है, जिसने डंडे से जोर से कोई धर्म परिवर्तन किया है तो उसे रोकने के लिए सिर देकर, बलिदान देकर उसे रोका गया है, गुरु तेग बहादुर साहब का त्याग है।

इस देश का यह भी इतिहास है कि जिसने डंडे के जोर से कुछ करने की सोची, सरहिंद की दीवारों की बात आई थी, चमकौर के मैदानों की बात आई थी, जहां गुरु गोविंद सिंह जी के पुत्रों को शहीद किया गया था, वह सूबा सरहिंद था, उसका सिर बाबा बंदा सिंह बहादुर ने चपड़चेड़ी में उतारा था और उतारकर बैलों की जोड़ी से बांधकर 20 किलोमीटर खींच-खींच कर सरहिंद उसे फतेहगढ़ की दीवारों के पास लाया था। हमें अपने इतिहास से सीखना होगा। जब हम ऐसे धर्म परिवर्तन की बात करते हैं, मैं हाउस में कहना चाहूंगा, मुझे इस बात का दुख है और मुझे गौरव भी है कि गुरु तेग बहादुर साहब, जिसने अलग-अलग धर्मों को, इस देश की खूबसूरती को बचाया, इस देश के लिए बलिदान दिया, उनका बलिदान दिवस नहीं मनाया जाता, उस दिन छुट्टी नहीं होती। अपने बगल में एक कदम पर सड़क के पार उनका संस्कार हुआ और यहां हाउस चल रहा था। आज देश में ऐसी बातें हो रही हैं, गुरु तेग बहादुर साहब का बलिदान अगर देश में दिल से मनाया जाता और स्कूलों और कालेजों में लैक्चर होते, गुरु तेग बहादुर साहब का क्या संदेश था, जब उनका सिर उतारा जा रहा था, चांदनी चौक में उन्होंने बोला था - "भय काहू को देत नहीं, न भय मानत आन।" जीयो और जीने दो। अगर हम इस देश में ऐसी बात करेंगे तो यह देश आगे बढ़ेगा। मुझे इस बात का बहुत गौरव है कि गुरू तेग बहादुर साहब जहां से आए थे, आनंदपुर साहिब, उसके नाम से जो कंस्टिटयूएंसी बनी है, मैं उस क्षेत्र से चुन कर आया हूँ। मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि यहां वाजपयी साहब के समय की बातें बहुत हुई हैं, मेरे मित्र ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जो बात कही है, चंगी बात कही है, सब प्रशंसा करते हैं, विरोधी भी करते हैं, वाजपयी साहब ने जो राजधर्म बनाने की बात कही थी, उसकी इन्होंने प्रशंसा की है। मगर मैं कहना चाहता हूँ कि अच्छी बात होती अगर ये अपने लीडर की बात भी कह देते कि उन्होंने क्या कहा था। यह भी एक इतिहास है कि भाई तारों सिंह को मुगलों ने सजा दी और कहा कि इनके केश काटे जाएं। भाई तारों सिंह ने कहा कि मेरे केश न काटे जाएं, मेरी खोपड़ी उतारी जाए। जब सन् 1983 में सिर के केश काटे जा रहे थे और दाढ़ी काटी जा रही थी तब इनके लीडर कह रहे थे कि जब बड़ा दरख्त गिरता है, तब धरती कांपती है। आज जब ये चर्चा इन्होंने शुरू की मुझे तो आश्चर्य हो रहा था कि जब ये कह रहे थे कि धर्म परिवर्तन ज़बरदस्ती नहीं होना चाहिए। सही बात है कि नहीं होना चाहिए, अच्छी बात है, सबने कहा है कि नहीं होना चाहिए।

मैं भरे हाऊस में यह बात कहना चाहता हूँ कि सबसे ज्यादा धर्मपरिवर्तन इस देश के लोगों का मजबूर कर इमरजेंसी के दिनों में उस समय की सरकार ने किया। जब हमारे देश के संविधान की प्रिएंबल बदली, उस समय किया। उसके कारण ये सब कुछ बवाल खड़े हो रहे हैं। उसके लिए हमें सोचना होगा। यहां इन्होंने एक और बात कह दी, मेरे ख्याल है कि

ये अपनी बात को वापस ले लेंगे और लेनी चाहिए, इन्होंने हाऊस में तेज़ी से कह दिया इन्होंने कह दिया कि संविधान ही ग्रंथ है। देखिए मैं भी सांसद हूँ, यहां सब लोग सांसद हैं, हम अपने संविधान को पवित्र मानते हैं, जहां तक देश के कानून की बात है, देश की मान्यताओं की बात है, मगर एक बात समझ लीजिए कि यहां कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो अपने-अपने धर्म को नहीं मानता होगा, अपने धर्म ग्रंथ को नहीं मानता होगा। हमारे लिए अपना संविधान भी सुप्रीम है, मगर हमारे लिए श्री गुरू ग्रंथ साहब सुप्रीम है। किसी के लिए गीता सुप्रीम है, किसी के लिए कुरान शरीफ सुप्रीम है, किसी के लिए बाइबल सुप्रीम है। इन्होंने कह दिया कि संविधान ही ग्रंथ है और कोई ग्रंथ ही नहीं है। यह शब्द निकाल देना चाहिए। ...(व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : महोदया, मैंने यह नहीं कहा है। ...(व्यवधान)

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : मैंने सुना है, अगर नहीं कहा है तो अच्छी बात है। मैं आखिर में यही कहना चाहता हूँ कि इस देश को आगे ले जाने के लिए हमें अपने इतिहास से सीखना होगा। अपने ऋषियों, गुरूओं, पीर-पैगंबरों की शिक्षा पर चलना होगा। जो हमारे गुरूओं ने कहा है कि -

"मानस की जात, सब्बे एक ही पहचान बो "

इस पर चलने की जरूरत है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER (PONNANI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, thank you.

This country is having a glorious tradition of communal harmony, which is really founded by Mahatma Gandhi. Mahatma Gandhi once said: "Even if I am killed, I will not give up repeating Ram and Rahim, which means to me the same God. With these names on my lips, I will die cheerfully." Those were the words of Mahatma Gandhi. We are proud enough to have born in the birth place of Mahatma Gandhi.

As far as this Government is concerned, my only complaint is this. This Government is not discouraging communal hatred. On the other hand, they are encouraging communal hatred for achieving their political ends. Every day they are creating controversies and are adding fuel to the fire. Two or three days back, a junior Minister made such a statement. Yesterday it was the turn of a senior Minister, who made a statement on Bhagwat Gita. Today it is conversion row. Another row is coming, which is linked to Taj Mahal. The BJP leaders of U.P have made a statement that Taj Mahal was built in the place of a temple. Your cultural nationalism debate is also going on. ...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Hon. Deputy-Speaker, Sir, when we had come to an agreement on the timing, that has to be adhered to. ...(*Interruptions*) We had come to an agreement on the timing and it has to be adhered to. Unfortunately, many of the people are discussing about other issues. What is the topic today what are we discussing? ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri Basheer, you come to the topic about conversion. Do not take long time because already we were expected to complete the speeches at 5 of the clock. We are taking another 20 minutes. At least, at 5.30 p.m., the hon. Minister should be able to reply. So, please come to the topic about conversion.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER : Yes, Sir, please allow me just a minute because I have just started speaking.

There is a new controversy about the Taj Mahal; introducing Sanskrit in place of German in the CBSC Schools, Love Jihad, was the trump card for the UPA in the Uttar Pradesh elections. So, these kinds of controversies are cropping up now. We have to put an end to these controversies.

Sir, my friends were saying about conversion to Islam and something like that. I would like to tell you that as far as the Islamic ideology is concerned, compulsion for conversion or giving some offer for conversion is anti-Islam. Islam does not permit this kind of conversion. I would abundantly like to make it very clear. We will have to think loudly. People may have their own faith and ideology. As far as India is concerned, it is a multi-religious, multi-cultural nation. As far as we are concerned, we are duty-bound to keep it up. Conversion may take place from one religion to another religion but if you make a programme of action for conversion, that is a kind of criminal offence. That is what is happening in the country now. I wish to say that we, the people of India, who are having a commitment to this value, should work together to put an end to this kind of an agenda.

With these words, I hope that wisdom will prevail upon everybody and maintain communal harmony in this country. With these words, I conclude.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) : महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। विश्व में सबसे बड़े लोकतत्र को मानने वाले देश के हम लोग निवासी हैं। इस देश में एक संवैधानिक व्यवस्था है। जो हमारा संविधान है, वह सभी जातियों और धर्मों को साथ लेकर चलने वाला है, चाहे हिन्दू हों, मुसलमान हों, सिख हों, ईसाई हों। हम तमाम लोग आज इस लोकतत्र की सबसे बड़ी पंचायत में बैठे हैं। हम सब लोगों की जिम्मेदारी बनती है कि उत्तर प्रदेश के आगरा में जो घटना घटी, 57 परिवारों के लगभग 200 लोगों का जो धर्म परिवर्तन कराया गया है, निश्चित रूप से हम तमाम लोगों की जिम्मेदारी बनती है कि अगर इस तरह की घटना लोभ और लालच देकर करायी गयी है कि हम आपका बीपीएल कार्ड बना देंगे, राशन कार्ड बना देंगे, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं माननीय मंत्री जी से चाहूँगा कि इसके बारे में वह जानकारी लें और सदन व देश को बताने का काम करें।

महोदय, जाति और धर्म के नाम पर हम तमाम लोग आपस में टकरा रहे हैं, यह दुर्भाग्यूपर्ण है। यह सदन चर्चा के लिए है, लेकिन इस सदन से कोई ऐसा सन्देश न चला जाए कि हमारा देश खंडित होने लगे। हम आपसे विनती करेंगे कि चाहे उधर के साथी हों या इधर के साथी हों, सब इस देश की एकता में विश्वास रखें। यह देश हमारा है। यह सब लोगों का

देश है। हम तमाम लोगों की जिम्मेदारी बनती है कि इस देश को टूटने न दें।

श्री भगवंत मान (संगरूर): महोदय, हमारा देश एक माला की तरह है। इसमें अलग-अलग रंग के मनके हैं। होना यह चाहिए था कि राजनीति धर्म से शिक्षा लेती, लेकिन हो यह रहा है कि राजनीति धर्म को शिक्षा देने लगी है। मैं किसी पार्टी के खिलाफ नहीं बोलूँगा, मैं कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं लगाऊंगा। मैं तो यह कहूँगा कि हमारे देश के नौजवान आज क्या चाहते हैं? लाखों की गिनती में नौजवान बेरोजगार हैं। वे उच्च शिक्षा चाहते हैं और शिक्षा के बाद वे यहीं पर रोजगार चाहते हैं। जनता बिजली, पानी के लिए तरस रही है, लोग इलाज के बिना मर रहे हैं, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं और हम राजनीतिक लोग यहाँ धर्म की बातें कर रहे हैं। एक तरफ तो मंगल की तरफ हमारे रॉकेट चले हुए हैं और दूसरी तरफ हम ये बातें कर रहे हैं कि हम आपका राशन कार्ड बना देंगे, आप इस धर्म में आ जाओ और कह रहे हैं कि आपकी घर वापसी हो रही है। पहले गरीबों के लिए घर तो बना दो, उनकी वापसी कहाँ करवाओगे? उनके पास तो घर ही नहीं है, उनके पास खाने के लिए रोटी नहीं है, चावल नहीं हैं, वे सब चीजों के लिए तरस रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहूँगा कि हमारे गुरुओं ने, हमारे देशभक्तों ने इंसानियत के नाते कुर्बानी दी थी, अपने किसी खास स्वार्थ के लिए या किसी मज़हब के लिए कुर्बानी नहीं दी थी। हमारे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में हर रोज़ हर गाँव में सरबत की भलाई की बात होती है -

"नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।"

पूरी दुनिया की भलाई की बात होती है। हम यह कहते हैं कि लोग उनको कभी याद नहीं रखते जो बैंकों में खाते खुलवाकर जाते हैं लेकिन लोग उनको कभी नहीं भूलते जो दिलों में खाते खुलवाते हैं। हमारे शहीदों ने, हमारे गुरुओं ने दिलों में खाते खुलवाए हैं। लोग हर दीवाली को भगवान राम की एक फोटो वाला कैलेन्डर ले आते हैं, श्री गुरु नानक देव जी की फोटो वाला कैलेन्डर आ जाता है, हनुमान जी की फोटो वाला कैलेन्डर आ जाता है। इसलिए नहीं आता है कि कोई कानून है कि यह कैलेन्डर लाना है। वह गुरुओं और देशभक्तों तथा शहीदों की फोटो वाला कैलेन्डर हम नए साल पर इसलिए लाते हैं कि उन्होंने हमारे दिलों में खाते खुलवाए हैं। आखिर में मैं कहूँगा-

"अल्लाह वालो, राम वालो, अपने मज़हब को सियासत से बचा लो।

एक ही रहने दो शहीदों का तिरंगा झंडा, हर रोज़ नए झंडे में डंडे फँसाने वालो।"

श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद) : सर, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। इस बहस का जवाब हमारे वज़ीरे पार्लियामानी देंगे। मैं उनके ज़रिये पूछना चाह रहा हूँ कि क्या यह बात सच नहीं है कि हमारे वज़ीरे आज़म ने कहा, जब उनसे पूछा गया कि आपका मज़हब क्या है, तो वज़ीरे आज़म ने कहा - इंडिया फर्स्ट। जब वज़ीरे आज़म से पूछा गया कि आपकी किताब कौन सी है, तो उन्होंने कहा - हिन्दुस्तान का आईन, कांस्टीटयूशन। अब इन दो चीज़ों को सामने रखकर मैं हमारी हुकूमत के ट्रैज़री बैंचेज़ से सवाल करना चाहूँगा कि क्या यह बात गलत है कि जो लोग आज मज़हब की तब्दीली की बात कर रहे हैं, वे हिन्दुस्तान के मुसलमान को, हिन्दुस्तान के ईसाई को पहले दर्जे का शहरी उस वक्त तक नहीं मानेंगे, जब तक कि हम अपना मज़हब तब्दील नहीं कर लेते? क्या यह बात गलत है या सही है?

जो लोग आज घर वापसी की बात कर रहे हैं, मैं बड़ी ही इज़्ज़त के साथ हुकूमत के सामने बात रखना चाह रहा हूँ कि आपके कैबिनेट में दो मुस्लिम वज़ीर हैं। अगर कोई उनके पास जाकर कहे कि भई! आप मुसलमान हैं, दोनों छोड़ दो और घर वापसी आ जाओ, तो आप कैसा महसूस करेंगे?

तीसरी बात मैं हुकूमत से पूछना चाहूँगा कि हमारे वज़ीर यह कह रहे हैं, यहाँ पर जो बहस हुई, हिन्दुस्तान के दस्तूर में आर्टिकल 341 क्या है? क्या वह मज़हब के ऊपर नहीं है? आप उसको तरमीम क्यों नहीं करते? हमारे वज़ीरे पार्लियामानी जवाब देते हैं कि कानून बनाया जाए। मैं वैंकैय्या नायडू साहब से कहना चाहूँगा कि बराए मेहरबानी आप काबिल हैं, आप बहुत पढ़े लिखे हैं। मैं आपको रिक्वैस्ट करूँगा, दरख्वास्त करूँगा कि हिन्दुस्तान के कांस्टीटयुएंट असैम्बली के जो डीबेट्स हैं, खास तौर से टी.टी.कृष्णामचारी और के.एम.मुंशी ने क्या कहा था आर्टिकल 25 पर जब बहस हो रही थी, कि आप इस तरह का कानून नहीं बना सकते कि कोई अपना मज़हब तब्दील न करे। एक और बात जो अहम बात है, वह यह है कि तमाम तंज़ीमें, जो इस तरह की हरकत कर रहे हैं, क्या इनका ताल्लुक बीजेपी से नहीं है? इनका अंबिलिकल कॉर्ड है बीजेपी से। वह रद्द कर दें कि इनका ताल्लुक नहीं हैं और इनके खिलाफ एक्शन लें। प्राइम मिनिस्टर एक बात कहते हैं, वज़ीरे खारजा एक बात कहते हैं। आप हिन्दुस्तान में एफडीआई लाना चाहते हैं। क्या इस तरह की बातों से एफडीआई आएगा? क्या इस तरह की दहशतगर्दी की बातों से, फसाद कराने से क्या हिन्दुस्तान में ग्रोथ होगी, क्या हिन्दुस्तान मज़बूत होगा? यह हुकूमत पर मुनस्सर है कि हुकूमत क्या चाह रही है। हुकूमत कहती है कि कानून लेकर आएँगे। मैं वैंकैय्या जी से पूछना चाह रहा हूँ कि हिन्दू माइनारिटी गार्जियनशिप एक्ट, 1956 क्या तरमीम करेंगे? हिन्दू एडाप्शन एंड मेनटेनेन्स एक्ट, 1956 सैक्शन 7, 8, 9, 11 क्या तरमीम करेंगे? हिन्दू मैरिज एक्ट, 1955 सैक्शन 13 क्या बर्खास्त करेंगे? हिन्दू सक्सैशन एक्ट सैक्शन 26 क्या आप उसको निकालेंगे? ऐसा नहीं हो सकता।

आखिर में, मुझे अफसोस है कि हमारे हिन्दुस्तान के उत्तर प्रदेश के एक बहुत कायदे अपनी तकरीर में कहते हैं कि उत्तर प्रदेश कुछ भी नहीं है, उत्तर प्रदेश में कुछ भी नहीं हो रहा है। क्या नहीं हो रहा है? उत्तर प्रदेश में ही तो यह हो रहा है। अगर आप और बीजेपी मिले हुए नहीं होते तो आप वहाँ एक्शन न लेते आर.एस.एस. और बजरंग दल के खिलाफ? दो दिन के बाद भी एक्शन नहीं लिया। 200 लोग कोशिश कर रहे हैं।...(व्यवधान) अलीगढ़ में इतनी गड़बड़ हो रही है। अरे, आप नूरा कुश्ती करना छोड़ दीजिए। इसीलिए हम हुकूमत से मुतालबा करते हैं कि अगर आपका मज़हब हिन्दुस्तान फर्स्ट है, आपकी किताब कांस्टीटयूशन है तो बंद करिये आपके लोगों को। ये बजरंग दल और आर.एस.एस. के लोग आपके लोग हैं। हम डरने वाले नहीं हैं, हम अपने मज़हब पर चलेंगे। मुझे जितना फ़ा हिन्दुस्तानी पर है, उतना फ़ा मुसलमान होने पर है। न ईसाई डरेंगे, न मुसलमान डरेंगे, आप लाख कोशिश कर लीजिए, हम मज़हब तब्दील करने वाले नहीं हैं। अगर मुल्क को बचाना है, अगर मुल्क को मजबूत करना है तो अपने *â€¦** को रोको, अपने *â€¦ ** को रोको, अपने चाहने वालों को रोको, तभी ये मुल्क बचेगा।

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Mr. Deputy Speaker, Sir, I thank you very much for giving me this opportunity to take part in this discussion. I would like to highlight two or three things regarding conversion. We are all eagerly hearing the debate during the last 2 Â½ hours.

17.31 hrs (Hon. Speaker *in the Chair*)

My main point is, the BJP and the NDA are playing a dual role in Indian politics. The hon. Prime Minister Shri Narendra Damodardas Modi is traveling throughout the world and speaking – so far he has addressed six Parliaments in the world – about our country, our Constitution, fraternity and friendship. He is speaking about 'Make in India', he is speaking about digital India etc. On the one hand the hon. Prime Minister is making all these diplomatic observations and statements throughout the globe and on the other hand, what the BJP, NDA and those parties being supported by the *Sangh Parivar* are propagating in the country, that is the contradiction which is taking place in this country.

I would like to highlight one thing here. If you examine the controversial statements made so far within the six months tenure of this Government in power, we can clearly see the divisive politics is the strategy which is being played out by the BJP Government at the Centre. Not only the junior Ministers and the *Bajrang Dal* leaders, even if we go through the statements of Shrimati Sushma Swaraj, she is also competing with other Ministers so that they are all in the same line so as to have saffronisation of Indian politics which is being played out now.

You may be aware that the World Hindu Summit took place in Delhi very recently. At the inaugural speech one of the eminent leaders of the *Sangh Parivar* stated that after so many centuries, after 600 or 700 years, a Hindu rule has come to this country? What is the message which is being given to the world? When we talk about investment in the country, technological upgradation in the country, technology unifies the whole world and the people irrespective of religion or caste. So, in such a situation, the divisive politics and the communal politics will definitely affect the tenets and the basic structure of the Constitution of India.

Madam, conversion, in any form – whether it is conversion or re-conversion – is nothing but exploitation of the social backwardness of the people and it is really a crime. Definitely it has to be stopped. If it is done with undue influence, coercion and force, definitely it is a crime. Therefore, stringent action has to be taken.

With these words, I conclude. Thank you very much.

* **SHRI C.N. JAYADEVAN (THRISSUR):** At this juncture, when we are seriously discussing, the issue of religious conversion; I would request this august House to remember Shri Narayana Guru, who said, what even be one's religion; the important thing is to become a better human being. Last year, our Prime Minister Shri Narendra Modi, who was then the Chief Minister of Gujarat, visited Kerala. He also visited Varkkala, which is the ashram of Shri Narayana Guru.

This year, many Congress leaders too visited Varkkala. Day before yesterday, when Rahul Gandhi came to Thiruvananthapuram, he also quoted Shri Narayana Guru's words.

Shri Narayana Guru said, "One caste, one religion, one god, for man". That is his message. He constructed a temple, and I don't want to go to it's history now. But on the walls of the temple, he wrote,

"With no caste discrimination,

Nor religious hatred;

This is an ideal place

Where all live in harmony!!

By quoting Shri Narayana Guru, I want to make a request to all the members present in the House and all citizens of India, who belongs to various religious faiths, "The problem is not which religion. or God, you believe in. The problem is to think that the existence of other religions is going to hamper the growth of your own faith; and to engage in hate propaganda. As a member of the communist party, I oppose, all attempts to mix religion with politics with the aim of grabbing power.

We, see religion and faith as a support system, on which those who are struggling in life can unload their burden.

To those who are bowed down by the burden of life, and cannot walk erect; religion becomes a crutch to lean on.

That religion and faith in God, should not be mixed with politics.

HON. SPEAKER: Please conclude.

SHRI C.N. JAYADEVAN : Attempts to use religion for a hidden agenda, and play politics, is leading to such incidents. I express my strong protest against all such attempts and would like to add that religious conversion will never lead to the growth of any religion. With these words I conclude.

Thank you.

श्रीमती रंजीत रंजन (सुपौल) : अध्यक्ष जी, आज हम लोग एक गंभीर विषय पर बात कर रहे हैं। मेरे ख्याल से सोलहवीं लोक सभा में तो बहुत सारे नए सदस्य हैं, लेकिन हमारे सामने जो फ्रंट बेंच पर बैठे हुए हैं, उनमें बहुत सारे सीनियर सदस्य हैं जो बीस साल, तीस साल, चालीस सालों से यहां हैं। अध्यक्ष जी भी इस लोक सभा और राजनीति में बहुत ही सीनियर हैं।

अध्यक्ष जी, कल मैं टीवी पर मलाला और सत्यार्थी जी की स्पीच देख रही थी जब उन्हें नोबल पुरस्कार मिल रहा था। दूसरी तरफ न्यूज़ में लगा हुआ था कि हम धर्मांतरण की बात कर रहे हैं। कुछ अजीब-अजीब सी स्टेटमेंट, जिन्हें किसी धर्म के ठेकेदार या महंत कह सकते हैं, उनके आ रहे थे। बहुत ग्लानि महसूस हो रही थी कि आखिर हमारी राजनीति और हमारी राजनीतिक सीमा कहां तक पहुंच गयी है। कौन-से पुरूषार्थ की बात हम इस सदन में बैठ कर करते हैं? चुनाव के वक्त बहुत सारी बड़ी-बड़ी बातें कही गयीं, बहुत सारे पुरूषार्थ की बातें कही गयीं, गरीबों की बात कही गयी, बिजली की बात कही गयी, शोषित की बात कही गयी, सड़कों की बात कही गयी। लेकिन, आज जिस तरह से सत्ता पक्ष ने यू-टर्न लिया है, आप यह मत कहिएगा कि मैं राजनीति कर रही हूं, निश्चित तौर से, चाहे वह पक्ष हो या विपक्ष हो, लेकिन आने वाले भविष्य के राजनीतिक लोगों को हम बहुत अच्छा संदेश नहीं दे रहे हैं। क्या हम भी कल यही काम करेंगे कि जब हम सत्ता पक्ष में नहीं हैं तो हम इस तरह के मुद्दों को आगे ले कर चलेंगे, लेकिन जब सत्ता पक्ष में हैं तो हमारे चुनाव के भाषण कुछ और होंगे, लेकिन सत्ता में आने पर कुछ और होंगे? यह अज़ीब विडम्बना है कि मैंने आपकी सत्ता के दो रूप देखे हैं। एक रूप, जो विदेश में जाकर छोटे-छोटे लोगों को बड़े बनाने के सपने दिखाने की बात करता है। वहीं दूसरा रूप, ग्रास रूट पर जहां कार्यकर्त्ता गरीबों की बात करते हैं तो आपका दूसरा रूप कभी ग्रास रूट में लोगों का धर्मांतरण कराना है, तो कभी लव ज़िहाद की बात करना है, तो कभी किसी के धर्म में हस्तक्षेप करना है।

अभी स्वामी जी गुरु तेग बहादुर जी की बात कर रहे थे। गुरु गोविन्द सिंह जी उनके बेटे थे। गुरु गोविन्द सिंह जी के चार बेटे थे, जिनमें से दो ने युद्ध में शहीदी दी, दो को चिनवा दिया गया और उन्हें किसलिए चिनवा दिया गया, क्या यह आप सबको मालूम है? हिन्दू राष्ट्र की रक्षा करने के लिए, जो हमारे अकाली दल के सदस्य नहीं बोले। ...(व्यवधान) औरंगजेब की बात तो आपने कह दी, औरंगजेब मुसलमान नहीं था, औरंगजेब एक अन्यायी था। आप बुजुर्ग हैं, लेकिन शायद हमें आपसे ज्यादा समझ हो गयी। ...(व्यवधान) औरंगजेब अन्यायी था। गुरू गोविन्द सिंह जी से प्रश्न किया गया कि क्या आप मुसलमानों के खिलाफ हैं? उन्होंने कहा कि नहीं। जो भी कोई जबरदस्ती किसी का धर्म बदलने की कोशिश करता है, मैं उस अन्याय के खिलाफ लड़ाई कर रहा हूँ।

गुरू नानक देव जी ने जनेऊ का खंडन किया था, क्योंकि आज हिन्दू धर्म में बहुत ज्यादा प्रोपेगेंडा (पाखंड)है और दूसरी तरफ उसी जनेऊ का पालन, उसकी रक्षा गुरू तेग बहादुर जी, गुरू गोविन्द सिंह जी और उनके बच्चों ने की थी। आप कैसे हिन्दू हैं? ...(व्यवधान) आप उन लोगों को भूल गए। यदि वे न होते तो आज पूरा हिन्दुस्तान मुसलमान होता। ...(व्यवधान) मैं मुसलमान या हिन्दू के खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन आप कैसे कृतघ्न हैं, ...(व्यवधान) जो उस व्यक्ति को भूल गए, वे इस हिन्दुस्तान राष्ट्र की क्या रक्षा करेंगे, जो अपनी रक्षा करने वालों को भूल जाते हैं?...(व्यवधान)

महोदया, मैं एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करूँगी। गुरू गोविन्द सिंह जी ने कहा था कि जिन्होंने अन्याय किया, हिन्दुस्तान से उनकी जड़ उखड़ जाएगी और बन्दा बहादुर के रूप में तीन साल में मुगलों का यहाँ से सत्यानाश हो गया और वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले गए। आप जिस तरह की राजनीति को पनपा रहे हैं, मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान में 65 प्रतिशत युवा हैं और वे इस तरह से धर्म की राजनीति पर गुमराह होने वाले नहीं हैं। हम आपको आगाह करते हैं कि बहुत जल्द अगर आपकी राजनीति की मंशा और आपका बाईलॉज यही रहा तो बहुत जल्द आपकी जड़ें उखड़ने वाली हैं। एक हिन्दुस्तान का नागरिक होने के नाते मैं आपसे यह कहना चाहूँगी।

माननीय अध्यक्ष : ठीक है, आपकी बात हो गई है।

श्रीमती रंजीत रंजन : मैं इसे पढ़कर अपनी बात समाप्त करती हूँ। मुल्ला कहो, नियाओ सदा, मेरे मन का भ्रम न जाए, सबमें एक खुदा कहत हो, तो क्यों मुर्गी मारत। चाहे ईश्वर ने, मुल्ला ने, अल्लाह ने, खुदा ने, राम ने यह कहा था कि अगर एक मुर्गी भी मारते हो तो उसमें ईश्वर है। आप तो लोगों को मारने की बात कर रहे हो। ...(व्यवधान) जिस गुरू तेग बहादुर जी की बात कर रहे हैं, उन्होंने शीश दिया पर शिरिर नहीं दिया, उन्होंने शीश दे दिया पर हिन्दुस्तान के धर्म को जबरदस्ती बदलने वालों को अपना धर्म नहीं दिया। आप तो राम के नहीं हुए तो आप रहीम के किस तरह से होगे, गुरू तेग बहादुर जी के नहीं हुए, यह वह वर्ग है, जो न राम की हुई, न रहीम की हुई, सिर्फ राजनीति की है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपस में बात नहीं करें।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

Madam, I must tell you that this is an important issue. This is an issue which is agitating the entire country. Some people are seeing it from the narrow angle. Personally, right from my student days I am looking at it from a different angle.

This conversion or re-conversion is a national challenge. This is a very serious issue. It cannot be used for the sake of politics and it also cannot be used just to criticize this Government or that Government, accuse this Government or that Government. It is not happening today. It has not happened yesterday. It is not happening only in Shri Mulayam ji's State or in some other State. In different parts of the country at different times, there were certain incidents. So, the entire country has to seriously introspect, look into this issue and come out with some sort of meaningful solutions.

Madam, when a notice for this debate was given, I thought it was a good opportunity where many people would introspect and give valuable, meaningful and constructive suggestions. I must tell you, hon. Speaker, that I am partly disappointed but, at the same time, elated by hearing the speeches of Shri Bhartruhari Mahtab, even Shri Deve Gowda ji, Shri Mulayam Singh ji, and Shrimati Ranjeet Ranjan.

मैं सभी का नाम नहीं ले रहा हूं। कुछ लोगों ने अपने अनुभव के आधार पर रचनात्मक सुझाव दिए हैं और उसका विश्लेषण करने की कोशिश की है। पप्पू यादव जी ने भी अपना नॉर्मल स्वभाव छोड़ कर, कुछ मात्रा में उन्होंने भी हिन्दू समाज में क्या-क्या कमजोरियां हैं, को फ्लैग किया है। उसके बारे में हिन्दू समाज एक पार्टी का नहीं है, वह भी सबको मालूम होना चाहिए। समाज में सभी लोगों को उसके बारे में चर्चा करना चाहिए। वह कह रहे हैं कि जूता पहनने नहीं देते हैं, मंदिर में नहीं जाने देते हैं, इसलिए कुछ लोगों ने धर्म परिवर्तन किया है, ऐसा कह रहे हैं। धर्म परिवर्तन के बाद भी, वहां जाने के बाद भी उनकी यही स्थिति है, इसलिए उनको आरक्षण मिलना चाहिए, ऐसा कुछ लोग बोल रहे हैं। उसके बारे में हम लोगों को गंभीरता से सोचना चाहिए। The entire country should think on these lines. ...(*Interruptions*) Some religions say that they do not believe in caste system and they do not believe in discrimination. That is their stand. I am not quarrelling with them. I hope that they live up to that stand and then uphold that sort of a thing, that there is no practice of untouchability.

Secondly, about the issues raised, some people have tried to utilize this opportunity just to accuse our Government as if the Government has done all these things and we are responsible for vitiating the entire atmosphere in the country. We have just come to power, hon. Speaker, only six months back. Some people started saying that the entire atmosphere and the mindset of the people have recently changed, and some people started giving curse. ...(*Interruptions*) आप थोड़ा संयम बरतें, थोड़ा वेट करें, आपको जब मौका मिलेगा तब कहिएगा। हम अभी-अभी सत्ता में आए हैं। पूरी दुनिया में हमारे प्रधानमंत्री जी की प्रशंसा हो रही है। ...(व्यवधान) चुनाव के बाद चुनाव, वह जीत रहे हैं। मैं राजनीति में नहीं पड़ना चाहता हूं, लेकिन आप लोगों ने जिक्र किया है, इसलिए मैं बता रहा हूं। यहां भाषण सुनकर किसी के मन में तुरंत परिवर्तन आएगा, ऐसा नहीं है। ...(व्यवधान) देश में परिवर्तन का प्रवाह चल रहा है। आपने देखा होगा कि भारत के इतिहास में पहली बार, श्रीनगर के शेरे-ए-कश्मीर, स्टेडियम में, अलग-अलग समूह और मजहब के लोग काफी संख्या में आए और प्रधानमंत्री जी का भाषण सुना।...(व्यवधान) It is not palatable to you. What can I do? ...(*Interruptions*) रिजल्ट देखो।...(व्यवधान) मित्र सुरेश जी 23 दिसम्बर के बाद छुट्टी होगी, बाद में काउंटिंग होगा, उसके बाद रिजल्ट आएगा, रिजल्ट के बाद हम दोबारा हाउस में बजट सैशन में मिलेंगे।...(व्यवधान) झारखंड और जम्मू-कश्मीर में क्या होगा, यह इश्यू नहीं है।...(व्यवधान)

So, my point is this. The Prime Minister has rightly said, as has been mentioned by some of our hon. Members, about the agenda on which we fought the election. Our agenda were development and good governance. This was the agenda on which the people gave us mandate...(*Interruptions*)

SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA): But there is no development.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: There is no development for the Congress party. What can I do? In spite of your best efforts, you are dwindling. You have dwindled also. It is really unfortunate for the country. I do not want the Congress party, which is supposed to be the senior-most party, to dwindle further....(*Interruptions*) पांच साल के बाद देखेंगे। ...(*Interruptions*)

Have patience, please, baba! We have been in the Opposition for 50 years. We have patience. You must have patience. Accept the reality. You have been rejected; we have been elected and selected. Try to understand this. This is the message of the people. Please have some patience...(*Interruptions*)

Madam Speaker, my friend Prof. Saugata Royji, whom I respect a lot, was particularly mentioning, time and again, about one Minister going to astrologer. What is the problem? I am not able to understand it. I have a cutting with me, I will send it to him. I do not want to mention the name of the Minister because he is a friend of mine and I respect him also. 'Vaastu-follower Minister's Office purified by priest' is the heading in the *Sunday-guardian.* Then, there is a paper cutting showing 'The Minister sent people to Tirupati to get his office room purified and furniture reset according to befitting Vaastu position'...(*Interruptions*)

What is the subject, I know better than you. You need not teach me. When you were in school, I was in high school. Please try to understand...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Every now and then, you are interrupting. Please do not do that.

...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Madam, there is nothing wrong. Some people believe Vaastu; some people believe in astrology; some people believe in something else; some people believe in *Rahu Kalam.* I believe in every *Kalam*...(*Interruptions*)

I do not follow *Rahu Kalam.* My grandfather told me: "As long as you are alive, every *Kalam* is good for you. The moment you are not there, it is good for others.'...(*Interruptions*) So, I am not on that. There are many paper cuttings with me. I can place them on the Table of the House also.

Secondly, my friend Shri Bashirji, whom I respect and who has worked with me in the Standing Committee also for a long, and some other hon. Members were trying to again pinpoint as if the Government is going back and taking the country to age-old, Sanskrit and all. Madam, a Conference was held from 13th to 15th September, 2013, wherein it was resolved that all the secondary schools in the country should introduce Sanskrit as a compulsory subject up to Class X. This 3-day Conference was inaugurated by the then HRD Minister -- I do not want to mention his name – in the presence of the then Minister of State, Shri Jitin Prasada and a very senior Congress leader, a very senior and respectable Member of Parliament whom everybody respects -- Dr. Karan Singh. We were also present on the closing ceremony of the function. In a letter dated 7th January, the HRD

Minister asked the Vice-Chancellors of the Central Universities to explore the possibilities of opening Sanskrit Department and to furnish action taken in this regard. One is, in school, make it mandatory. The other is, asking Vice-Chancellors to explore the possibilities of having Sanskrit. It was said by them to first make it compulsory to students and then explore the possibilities...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Hon. Members, please do not disturb.

...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record except the speech of the hon. Minister.

(Interruptions) â€¦ *

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : यह क्या रनिंग कमैंट्री है?...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं होता है।

â€¦(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Have some patience. You have to be patient for five years. Each year, 365 days; each day, 24 hours; every hour, 60 minutes; and every minute, 60 seconds, you have to have this patience. There is no way...(*Interruptions*)

Madam, some Members said that the non-vegetarian meals are stopped. Non-vegetarian meals were stopped during the earlier regime. In this connection also, I can give the cuttings of the papers. My only request is, please do not spread misinformation, disinformation. You argue with us. Yes, some of us respect Sanskrit and some of you respect more German. It is okay. Your affection is there; my affection is here. What is wrong in that? Sanskrit is a great language; it is an ancient language. So, that being the case, there is nothing wrong...(*Interruptions*)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA : It is not the imposition of the Sanskrit language...(*Interruptions*) You are compromising...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: There is no question of compromising anything...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: This is not the way, please.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Have patience, please. You introduced it. You are always having self-goals. Please sit down. I do not want to goal further.

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, सुरेश जी, आज आपको क्या हो गया, इतने क्यों परेशान हो रहे हैं, ठीक है, सुनिए।

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Truth is sometimes unpalatable. What can I do, Suresh? I cannot change the truth. There is another propaganda. After this Government came, communal tension temperatures have risen across the country. This is the propaganda which you are doing. On this propaganda, you see this, 'Communal violence down'. This is the data. I can give you all these details also. This is not my figure. This is the figure collected from different States by the Home Ministry. So, you can get that.

This is also another thing....(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : आप कमेंटेटर बॉक्स में बैठे हैं क्या?

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : टाइम्स ऑफ इंडिया है न, खलिज टाइम्स नहीं है, इंडिया टाइम्स है।

Then, my friend, Kharge Ji, who is not here, has quoted the earlier charge that incidents of communal violence have increased after the NDA took over and all that. They are not increasing. You may be disappointed. You may be increasing the number but they are not increasing on the field because they know that there is a Government which means business.

Then, I am coming to the present issue which is another issue. Just now I have spoken to the Collector, Agra. They call him DM. The Collector, Agra told me that there is total peace. There is no problem with regard to public order. Even Mulayam Singh Ji said it. He is a senior man. He is former Chief Minister of the State. Irrespective of Parties and all, we respect his experience. Though he himself is not happy with the general law and order situation there and all that, he has been giving suggestions. That is how the statesman should be. The statesman should really advise and guide people. That is what he is doing. I am happy about it. So, I spoke to him.

Then, I just had a discussion with the officials of the Home Ministry. The Home Ministry officials told me that they are in touch with the State Government. After this incident took place, an FIR was lodged and it is registered. The inquiry is on. As if Heavens are falling on earth, you try to say, no, you should be held responsible and all that. How can I be held responsible? Law and order is a State subject. Action or no action is to be decided by the State Government. I am not here to criticize the State Government also. It happened in Uttar Pradesh. It may happen in some other State also....(*Interruptions*)

Fortunately, different States of the country are ruled by different Parties. At the Centre, we are in power. In some States, you are in power. You were in power till yesterday. You are not in power today. You may not be in power in other States also. That is a different matter. So, keeping that in mind, what I suggest is that on UP, you proved to be wrong; on increase of communal violence, you proved to be wrong; on Sanskrit, you proved to be wrong; on non-vegetarian, you proved to be wrong; and on going to astrologer, you proved to be wrong....(*Interruptions*)

Now, let us come to another basic issue. We respect the freedom of faith. ऐसे नहीं चलेगा। मैं एस्केप नहीं करूंगा, रात 12 बजे तक बोलता रहूंगा। आप चिन्ता मत करिए, बैठ जाइए।

श्री मुलायम सिंह यादव : बदायूं में गए थे, बेनकाब हो गए। सीबीआई की रिपोर्ट आने के बाद बदायूं में जाकर बोलने जितने लोग थे, बेनकाब हो गए। उनको चाहिए कि माफी मांगें।...(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: We respect the freedom of faith as a fundamental right of every citizen. This is not a courtesy by this Government or that Government. It is enshrined in the Indian Constitution. So, everybody has to respect that. Then, I have respect for other religions. In my own village I go to Dargah sometimes. The Dargah's name is Mastan Vali Dargah. My father-in-law's name is Mastan Ayya Naidu....(*Interruptions*) Yes, that is the Indian culture. I am

18.00 hrs

not going to Dargah for the sake of votes. I am not revealing the secret because I want to have some support from any community. We believe that going to that Dargah will do good. That is the confidence. आपके साथ कौन है? मुस्लिम लीग आपके साथ है, मजलिस आपके साथ है और आप हमें प्रवचन दे रहे हैं। ...(व्यवधान)

However, freedom of faith cannot be allowed to become a licence for sustained foreign funded campaign for proselytisation, which has gained momentum in various States in the country in recent years. Tribals, Scheduled Castes and the poor belonging to other communities or classes seem to be the target of this proselytisation.

HON. SPEAKER: It is 6 o'clock. सभा की सहमति से हम काम पूरा होने तक समय को आगे बढ़ाते हैं।

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I want to quote what Mahatma Gandhi ji said. He said, "I disbelieve in the conversion of one person by another. My effort should never be to undermine another's faith. This implies belief in the truth of all religions and, therefore, respect for them. It implies true humility". It is mentioned in *Young India* magazine on April 23, 1931.

He further said, it is Mahatma Gandhi and not me, "If I had the power and could legislate, I should stop all proselytizing. In Hindu households the advent of a missionary has meant the disruption of the family coming in the wake of change of dress, manners, language, food and drink." It is mentioned in *Harijan* magazine dated November 5, 1935.

What is proselytisation? It is conversion. This is what Mahatma Gandhi said. You never bothered what Mahatma Gandhi said. You never followed Mahatma Gandhi. ...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : यह क्या हो रहा है? ठीक है, महात्मा गांधी का नाम सब लोग ले सकते हैं।

â€¦(व्यवधान)

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : ऐसा गलत प्रचार करके आप लोग यहां से वहां गये और हमें वहां से यहां भेजा। ...(व्यवधान) अगर आप ऐसे ही गलत प्रचार कन्टीन्यू करते रहेंगे तो एक-दो दशक तक यही स्थिति बनी रहेगी और आपको ऐसे ही बैठना पड़ेगा। यह मैं आपको बताना चाहता हूं। ...(व्यवधान)

The entire country is watching how I patiently heard you and how you are hearing me. Though there may not be visitors in the Gallery, the entire country is watching all of us. They will be the best judges. They have given their judgement six months back. They will give judgement as and when the time comes.

Mahatma Gandhi further said, "The deadliest poison that ever sapped the fountain of truth is conversion." He used such a strong word. After Independence he gave two pieces of advice to my Congress friends, the original Congress friends. His first advice was, 'Disband the Congress Party'. But they did not bother. The second advice he gave was, 'Back to Villages'. They have moved to towns and even ignored the Mahatma Gandhi's advice. That is why today urbanisation has become a reality and I have to take care of the Urban Development Ministry. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: He is not advising you. Do not get up every now and then.

...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am not giving any *paap parihar patra*. I am not giving any certificate to anybody, how can I give certificate to Congress Party? Can anybody give a certificate? If people have rejected it, then how can I give you certificate? ...(*Interruptions*) Madam, they have criticized RSS. ...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : सब एक साथ नहीं बोलेंगे।

â€¦(व्यवधान)

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : अध्यक्ष महोदया, उन लोगों ने मेरी पार्टी, मेरी सरकार और जिस संगठन का हम बहुत आदर करते हैं, उसके बारे में ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप क्यों टोक रहे हैं ?

â€¦(व्यवधान)

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : ऐसे संगठन के बारे में इन लोगों ने क्या-क्या कहा? राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बारे में क्या-क्या कहा? उसका क्या संबंध है? ...(व्यवधान) हाउस में

जो बहस चल रही है, उसका राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से क्या संबंध है, यह हमें समझ में नहीं आया। जब मैं बोलूंगा तो उन्हें आपत्ति होगी। ...(व्यवधान) जब मैं कांग्रेस पार्टी का नाम लेता हूं तो उन्हें आपत्ति होती है। ...(व्यवधान)

RSS is a great organisation in the country. RSS means 'Ready for Selfless Service'. That is RSS. I feel proud that I have the RSS background. It is because of RSS background, discipline, character, calibre, capacity that I have come to this level. We feel proud. ...(*Interruptions*) Many of us have this background. ...(*Interruptions*) Their background is also known. ...(*Interruptions*)

Madam, Swamy Vivekananda on 28 November 1893 is reported to have said that : "I have often been asked ...(*Interruptions*) What is this? ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: No, please sit down.

...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: This is not the way.

...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : यह क्या तरीका है? क्या हो गया है?

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : रिप्लाई सुनना पड़ेगा।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Shri Rajesh, please go to your seat.

...(*Interruptions*)

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI ANANTHKUMAR): Madam, we are definitely proud of RSS. ...(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यह क्या हो रहा है?

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Your own Minister is speaking. Please sit down. Let him speak.

...(*Interruptions*)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU : Madam, Swami Vivekananda ...(*Interruptions*)

18.07 hrs

At this stage, Shri Kodikunnil Suresh and some other

hon. Members left the House.

श्री एम. वैंकैय्या नायडू : जब नोटिस दिया था, तब मैंने आपको बताया था कि यही होने वाला है। वे लोग जो नोटिस देंगे, वही हंगामा करेंगे, आलोचना करेंगे, टॉक आउट करेंगे और वॉक आउट करेंगे। यह उनकी पद्धति है।...(व्यवधान) They do not follow democratic principles; they do not have respect towards their political opponents; they do not give ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**

श्री एम. वैंकैय्या नायडूः आपकी विचारधारा अलग है, हमारी विचारधारा अलग है।...(व्यवधान)

18.08 hrs

At this stage, Shri Mulayam Singh Yadav and some other

hon. Members left the House.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU : Madam Speaker, I would not have gone one line or one word this way or that way, but if they accuse and abuse the mother organization, from where we have taken inspiration, then I cannot be a silent spectator for all the abuses that are made.

Shri Dinanath Batra is one of the great educationists. You may differ with him and you can criticise him, but how do you abuse and condemn him? This is another point. So, we have to put the record straight. This Parliament is there for ever. The Parliament records are there for future generations also. So, I am not only talking for the Members of Parliament here, but I am talking for the people of the country because we have been

elected for that purpose.

Madam, Swamy Vivekananda said on 28 November 1893 that : "I have often been asked in this country, USA, if I am going to try to convert the people here in America. I take this for an insult. If somebody says that I have come to America to convert people, then I take this for an insult. I do not believe in this idea of conversion. Today, we have a sinful man; tomorrow according to your idea he is converted and by and by attains unto holiness. Whence comes this change?"

As for Dr. Sarvapalli Radhakrishnan, it is a very important debate and you should go in the history of the Parliament. Dr. Gopal, who wrote biography of Dr. Sarvapalli Radhakrishnan said that : "Dr. Radhakrishnan was particularly critical of the missionaries in India and did not hesitate to describe the Anglican people as linked up with British imperialism". These are not my words, but that of Dr. Sarvapalli Radhakrishnan. He further said that : "â€¦intelligent understanding of the deeper unity of principles among all religions is the need of the hour."

What Quran says; what Bible says; what Bhagvat Gita says; and what Guru Granth Saheb says is that we must try to understand the deeper meaning; then do soul-searching; and then try to live up to the expectations of that religion that we are professing. Madam, according to me, 'religion' is a personal matter. I am coming to that.

Shri Purushottam Das Tandon, many of these people may not remember his name, said:

> "We Congressmen deem it very improper to convert from one to another religion or to take part in such activities and we are not in favour of this."

> This is what Shri M. Ananthasayanam Ayyangar said in the Constituent Assembly:

> "It is unfortunate that religion is being utilized not for the purpose of saving one's soul but for disintegrating society. Recently after the announcement by the Cabinet Mission and later on by the British Government, a number of conversions have taken place. This is dangerous. What has religion to do with a secular State?"

The Iron Man of India, who is the unifier of India, and my favourite leader and the favourite leader of many in this country, Sardar Patel Ji said:

> "This is not a matter free from difficulties. It is well known in this country that there are mass conversions, conversions by force, conversions by coercion and undue influence, and we cannot disguise the fact that children also have been converted, that children with parents have been convertedâ€¦"

Another senior Member, Shri R.V. Dhulekar said:

> "In the present environment, all sorts of efforts are being made to increase the population of a particular section in this country. I think that this clause prohibiting conversion should be retained. I submit that we cannot now tolerate things of this nature. We are being attacked, and we do not want that India's population, the numerical strength of the Hindus and others communities should gradually diminish and after ten years the other people may again say that we constitute a separate nation. These separatist tendencies should be crushed."

Madam, coming back to the main issue, when you yourself have told me that this was the notice that you had received, I had no hesitation in accepting it because this is a matter that should be discussed and debated.

We have a legislation, which was moved earlier -- Shri Tathagata Satpathy can correct me -- but it was approved during Shri R.N. Singh Deo's period, after Niyogi Committee made some recommendations. Then, in Madhya Pradesh, a law was brought in during the Congress regime. In Himachal Pradesh, a law was brought in during the Congress regime. In Arunachal Pradesh, a law was brought in. They were brought not because of Shri Narendra Modi, not because of BJP and not because of RSS. It is because they have realized that fraudulent conversions were taking place and those conversions were creating social tensions. साप्रदायिक तनाव हो रहा है। आप अपने भगवान की पूजा करें और मैं अपने भगवान की पूजा करूँ। इसमें क्या प्रोब्लम है? इसमें किसी को कोई प्रोब्लम नहीं होनी चाहिए। इस देश में, जिसे हिन्दू कहते हैं, ये सब एक ही मज़हब के नहीं हैं। इसमें आर्य समाजी हैं, वैदिक हैं, शैव हैं, जैन हैं, साई बाबा के भक्त हैं और इसके साथ ही साथ कुछ लोग आइडल वरशिपर्स हैं, कुछ लोग बिना आइडल के वरशिप करते हैं, इस देश में सिख धर्म को फौलो करने वाले लोग हैं। यदि आप मुस्लिम हैं तो मुझे क्या प्रोब्लम है, आप क्रिश्चियन हैं तो मुझे क्या प्रोब्लम है, हम सब लोग एक हैं। " अलग भाषा, अलग वेश फिर भी अपना एक देश, विविधता में एकता भारत की विशेषता ", यही इस देश की भावना है।

Friends, I am coming to another point. Some people have the problem of having some allergy to the word 'Hindu'. I would like to take the House into confidence and say that this word 'Hindu' was not given by Shri Narendra Modi, Venkaiah Naidu, Shri Atal Behari Vajpayee or Shri Advani, and not even by the RSS. When you say 'RSS', it is not a 'Hindu' name; it is 'Rashtriya Swayamsevak Sangh'. There is a newspaper in this country which is known for its views and its name is *The Hindu*. There is a newspaper in Delhi which is called *The Hindustan Times*. That name was not given by me. हिन्दुस्तान एक हिन्दी अख़बार है। हिन्दुस्तान एयरोनॉटिकल लिमिटेड कंपनी है, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स, एच.एम.टी. वाच कंपनी है, हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड विशाखापत्तनम में है, ये सारे नाम कहाँ से आए, ये नाम हमने नहीं दिये, ये राजनीतिक कारणों से नहीं दिये गये, ये शुरू से ही आते रहे हैं। यह हिन्दुस्तान है, वह पाकिस्तान है, ऐसा उन लोगों ने कहा है।

महोदया, आपको भी याद होगा 15 अगस्त और 26 जनवरी को जब हम तिरंगा झण्डा फहराते हैं तो हम क्या कहते हैं? हम कहते हैं- " जय हिन्द ", क्या इसका अर्थ यह है कि हिन्दुओं की जय और बाकी लोगों की नहीं, ऐसा है क्या? नहीं, ऐसा नहीं है। हिन्दुस्तान की जय हो। What is 'Hindustan'? "Hindustan" means "all people irrespective of caste, creed, sex or religion." India is one. We are all one people, one country. That is the point. We are a Party that believes in such a philosophy.

We believe in such a philosophy. Then, how can we be accused? Who are the people who are responsible for the partition of the country? Whose Party is responsible for that? That Party joins the Government and teaches and preaches to my Government. Then, my friend from Hyderabad was giving me a lecture. What his brother has said, I cannot quote because he is a Member of the Legislative Assembly.

What has he said about Hindu Gods? I do not want to repeat it because we should not use this forum to rouse passions outside and create tensions which are not there. What is required is not tension – what is required is attention towards the development. That is the agenda of this Government. So, keeping that in mind, what I appeal to all parties in the country is to seriously introspect on this. Let there be anti-conversion laws in all the States. Let there be anti-conversion law at the Centre also. Let us all seriously work towards the progress. We preserve our culture. You feel proud. If you feel proud that you want to be a Hindu, no problem or a Muslim, no problem or a Christian, no problem. मजहब अलग है, लेकिन सबकी संस्कृति, सबकी जीवन पद्धति एक ही है। पूजा पद्धति अलग है, मजहब पूजा पद्धति होता है। संस्कृति जीवन पद्धति होती है। आदि काल से, वेद काल से, पुण्य काल से, पुराने काल से जो पूर्वजों ने दिया, हमको जो विरासत में मिला, वही भारतीयता है। कुछ लोग उसको हिन्दुत्व कहते हैं। आप हिन्दुत्व नहीं कहना चाहते तो उसे भारतीयता कहिए, इंग्लिश में इंडियननेस कहिए, हमको कोई आपत्ति नहीं है। मगर, बाकी लोगों का मजाक उड़ाना ठीक नहीं है। कहते हैं सैफ्रनाइजेशन हो रहा है, कहां सैफ्रनाइजेशन हो रहा है? क्या सैफ्रन कोई गलत शब्द है इस देश में? कहते हैं संस्कृताइजेशन हो रहा है, यह हो रहा है, वह हो रहा है, ऐसा एजेंडा ला रहे हैं। We are very clear of what we have promised to the people. We will be working hard only to fulfil that agenda and our leader, Pandit Deendayal Upadhyay said Antyodaya – upliftment of the poorest of the poor दरिद्र नारायण की सेवा, स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा, पंडित दीन दयाल जी ने कहा, नरेन्द्र भाई मोदी जी भी वही कह रहे हैं। इसलिए मित्रो, बाकी लोगों के मन में कोई गलत फीलिंग नहीं होनी चाहिए। विपक्ष के लोगों से मेरी इतनी ही आपत्ति है। मैडम, रूल्स आपको भी मालूम है। अगर मंत्री नहीं हैं तो डिबेट को स्वीकार करने की कोई जरूरत नहीं थी। The Minister has to be there. But still I have agreed to accommodate them because they are thinking that something is going to happen. They may raise such issues any number of times, there would not be any increase in tension outside. There will be only focus on development. That much I can assure them. If there are specific complaints or if something is happening in Uttar Pradesh, the District Magistrate, the Superintendent of Police, the State Government will have to take the action. If something is happening in some other State, that State Government has to take action. If you want an advisory from the Central Government, the Centre is ready to help the States in maintaining law and order and in maintaining communal harmony. Within six months of coming to power, you want to tear us, no, it is not acceptable. You want to use this forum of Parliament to defame my Government, to defame my Prime Minister and you give slogans against my Prime Minister, that is not acceptable. People's mandate is for BJP for this period

Madam, I am sorry, I have to speak this because as I told you that each person brought different things into picture in their own way. My Minister who is one of the able Ministers, Smriti Irani has been performing her responsibilities in a nice and effective manner. People who heard in this House, they are all very much impressed by her. You are trying to brand her. What is wrong if she goes to an astrologer? You do not go. Who asked you to go to astrologer? This Government has not issued circular to all that everybody should go to an astrologer. I will not go. My point is very simple. Why do you insult others' belief? As long as the belief not come in the way of public order, as long as the belief not come in the way of the progress of the country, you should allow that much freedom to the people. You are saying that तानाशाही नहीं चलेगी। लास्ट टाइम भी कहा, अभी भी कह रहा हूं, उनकी संख्या कितनी है? I think four-fifth of the Parliament is sitting here. You, one-fifth people are accusing us. You want to speak, you want to disturb, you do not want anybody else to say anything, only your things should go on record and you go on using the same gramophone record everytime, it is not acceptable. There is a saying Madam. मैं नहीं जानता कि आपका ऐसा अनुभव है या नहीं, बचपन में हम लोग ग्रामोफोन रिकॉर्ड सुनते थे, एचएमवी ग्रामोफोन रिकॉर्ड जब कुछ दिन में स्ट्रक होता है तो उसी जगह पर रुककर वही गीत दोहराता रहता है - ओ चन्दा मामा...ओ चन्दा मामा...ओ चन्दा मामा...यह क्या तरीका है।...(व्यवधान) I am not joking Madam. This is what people talk about in villages. You can talk to anybody about HMV Gramophone record. That gramophone record has gone now and other records have come. If they want to raise the issue, they must have the patience to hear the response, they must have the patience to hear the criticism from the other side also. अदरवाइज वन-वे ट्रैफिक नहीं चलेगा। यह तो उन्हें समझना चाहिए। I only hope that in future whenever they give notice, we are ready to discuss and debate on each and every issue. My Prime Minister told me that let us discuss any issue, every issue, any time provided the Chair admits.

Lastly, I want to submit to the entire House that I have been seeing from the day one, every day, there is Adjournment Motion; every day, there is notice for suspension of Question Hour. If it is their policy not to have Question Hour, try to convince others. The Ministers will not have any work because when there are no questions, there will not be any answer also. But if they put the question and then do not allow it and then say नहीं, नहीं, आपने भी विपक्ष में किया है, कुछ किया है, तो फिर क्या शुरु से ऐसा करते रहेंगे? पांच साल वेट करो, कुछ स्कैम-स्कैंडल होने दो। ऐसा कुछ हुआ नहीं, 2जी हुआ नहीं, सी.डब्ल्यू.जी. हुआ नहीं, कोल-स्कैम हुआ नहीं, आदर्श स्कैम हुआ नहीं। कुछ हो, तब आप आंदोलन करें, तो मैं समझ सकता हूं। बिना आवश्यकता के क्यों आप विचलित होकर डिस्टर्ब करते हो। मेरी प्रार्थना विपक्ष से केवल इतनी है कि Please have patience. The country is watching all of us. The other day one youngster from the BJD, maybe Shri Tamradhwaj Sahu – I do not remember his name – spoke on IITs and education. I was really thrilled. The next day I saw another boy from Telugu Desam Shri Ram Mohan speaking in English. I was thrilled. I found a Member from TRS Madam Kavitha, first-timer to the Parliament. She was explaining her point of view. I always feel proud because they are outsiders and they are the future of the country, whatever party they may belong to.

The other day, you have complimented Madam Poonam Mahajan. हमारे मित्र प्रमोद जी की सुपुत्री है। प्रमोद जी ने संसदीय कार्य मंत्री के रूप में कार्य किया है, We have all worked together for years. I cherish his memories because both of us were General Secretaries in the Party and also have taken many decisions and always used to be helpful to the Prime Minister and the Deputy Prime Minister in those days. His daughter has lived up to the expectations. There are a lot of other examples from different parties. The way they are speaking, the way they are articulating and the way they are projecting different issues, we should all feel proud. We must allow such debates. The country is watching the Parliament. Moreover, they have a greater responsibility comparatively. They say that we are a new Party and we were not born before Independence. They only brought Independence. They are saying that. That being the case, they are expected to behave in a more matured manner. This is only my advice to the Congress Party friends. Let them have some patience and wait for five years. I can assure you and the House that the Government will do whatever is required to maintain communal harmony in the country, maintain social tranquillity in the country. The Centre is ready to extend any help to any State. I have consulted my Home Ministry officials also. I have consulted my colleague Home Minister also. If there was a proper notice before hand, he would have been here. He would have been more effective in responding to this. But this responsibility is given to me because our friends said that it should be discussed today itself. So, I had to take that responsibility. I think, I have tried to convey the thinking of the Government and also the expectations of the people to the extent possible.

18.23 hrs

STATUTORY RESOLUTION RE: DISAPPROVAL OF COAL MINES (SPECIAL PROVISIONS) ORDINANCE, 2014

AND

COAL MINES (SPECIAL PROVISIONS) BILL, 2014---Contd.

HON. SPEAKER: Now, if the House agrees, we will take the legislative business relating to the Coal Mines Bill. Should we start it because the person who is supposed to speak Shri C.N. Jayadevan, he is not present?

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT, MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): The others will speak. We may continue this.

HON. SPEAKER: So, then Shri Varun Gandhi to speak.

The House stands adjourned to meet again tomorrow, the 12th December, 2014 at 11. a.m.

18.39 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Friday, December 12, 2014 / Agrahayana 21, 1936 (Saka)

---

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड ड्ढद्म् ह्ढड्डड्ढढ्ढड्ढड्ड डन्न् ण्ड्ढ ण्ड्डत्ढ़्.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ढ्ढड्ढड्डय्ड्ढड्ड ड्ढद्म् थ्ड्डत्ड्ड ह्द ण्ड्ढ ड्ढड्डथ्ड्ढ.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड.

* ग़्ह्द्य् ढ्ढड्ढण्ह्ढड्डड्ढड्ड ड्ढद्म् ह्ढड्डड्ढढ्ढड्ढड्ड डन्न् ण्ड्ढ ण्ड्डत्ढ़्.

* Eदथ्त्द्मर्ण् ढ्ढड्डदथ्ड्डय्त्ह्द ह्ढ ण्ड्ढ म्द्रड्ढड्ढण् ह्ढश्त्दड्डथ्न् ड्डड्ढथ्त्ध्ड्ढढ्ढड्ढड्ड त्द ड्ढथ्द्वदर्व.

* ग़्ददृय् द्धड्ढहदृद्धड्डड्ढड्ड

* Eदथ्त्र्ण् य्द्धड्ढदथ्ड्डय्त्द्द द्द ण्ड्ढ म्द्रड्ढड्ढहण् द्द्धश्र्त्दड्ढथ्न् ड्डड्ढथ्त्ध्ड्ढद्धड्ढड्ड त्द ग्ड्ढथ्ड्ढड्ढथ्ड्ढथ्.

* ग़्ददृय् द्धड्ढहदृद्धड्डड्ढड्ड.

* ग़्ददृय् द्धड्ढहदृद्धड्डड्ढड्ड.

* ग़्ददृय् द्धड्ढहदृद्धड्डड्ढड्ड.